



सतत एवं व्यापक

मूल्यांकन

दिशानिर्देश



एक कदम स्वच्छता की ओर

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

दिशानिर्देश



विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जनवरी 2020 पौष 1941

PD 5T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2020

100 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली—110016 द्वारा प्रकाशित तथा श्री राम प्रिंटेर्स, डी-6 एवं एफ-455, सैक्टर-63, नोएडा—201301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5292-220-8

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमित के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमित के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फ़ोन : 011-26562708

108 ए 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होम्डेकेरे

बनाशंकरी III इस्टेज

बेंगलुरु 560 085

फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस

निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी

कोलकाता 700 114

फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगाँव

गुवाहाटी 781021

फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : विबाष कुमार दास

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

सहायक उत्पादन अधिकारी : अतुल सक्सेना

आवरण

ब्लूफ़िश डिजाइनस

प्राक्कथन

परीक्षा का तनाव और भय कम करने के प्रयास में राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न नीति दस्तावेजों द्वारा समय-समय पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की अनुशंसा की गई है। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम—2009 (आर.टी.ई.) ने बच्चों की प्रगति का आकलन करने के संदर्भ में उस परंपरागत व्यवस्था, जिसमें बच्चों को अंकों या ग्रेड के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में बाँट दिया जाता था, से हटकर एक नयी दृष्टि प्रदान की है।

विभिन्न राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं ने समय-समय पर पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री और शिक्षणशास्त्र में सुधार की बात कही है, फिर भी ज़मीनी स्तर पर किसी भी तरह के बदलाव नज़र नहीं आ रहे हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि आकलन के लिए अभी भी 'टेस्ट' और 'परीक्षा' लेने जैसे तरीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। आकलन की यह प्रणाली वैयक्तिक आवश्यकताओं, सीखने की गति और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को कोई महत्त्व नहीं देती है। यह आकलन प्रणाली को एकतरफा प्रक्रिया के रूप में देखती है और बच्चों के अधिगम में शिक्षक की भूमिका को भी नज़रअंदाज़ कर देती है। कक्षाओं का ऐसा माहौल, जो सीखने-सिखाने के संदर्भ में पूरी तरह से सहभागिता पर आधारित हो, 'सीखने' के कौशलों का विकास करने में सहायता करता है। इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक लगातार टेस्ट लेने और उनका रिकॉर्ड रखने जैसी बोझिल गतिविधियों तले दब न जाएँ। इसके साथ ही उनके पास न केवल कौशल हों, बल्कि उन्हें खोजबीन, नवाचार आदि के लिए स्वतंत्रता भी प्रदान की गई हो।

आर.टी.ई. अधिनियम—2009 की धारा 29 (2) के अनुसार पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रियाओं के दिशानिर्देश उपयुक्त अकादमिक संस्थाओं द्वारा तैयार किए जाने चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष संस्था होने के कारण राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में सी.सी.ई. पर जानकारी देने हेतु समय-समय पर विभिन्न प्रकार की संसाधन सामग्री विकसित की है और उसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया है। राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों द्वारा सी.सी.ई. के अंतर्गत किए गए प्रयास महत्वपूर्ण हैं। परंतु सी.सी.ई. की अधूरी समझ, आकलन की वास्तविक अवधारणा के अनुरूप नहीं बन पाई इसलिए असंतोष की कुछ आवाज़ें उठने लगीं क्योंकि अब शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों स्वयं को बोझिल अनुभव कर रहे थे। इस दृष्टिकोण को और प्रारंभिक स्तर के सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए, रा.शै.अ.प्र.प. ने सी.सी.ई. में एकरूपता लाने का एक प्रयास किया है इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि विद्यालयी स्तर पर सभी पणधारकों के लिए उपयुक्त लचीलापन भी बना रहे। ये सामान्य दिशानिर्देश हैं, अतः किसी भी सी.सी.ई. कार्यक्रम को अपनाने और उससे संबंधित संसाधन सामग्री विकसित करने के लिए ये काम में लाए जा सकते हैं।

इन दिशानिर्देशों को सभी राज्यों, केंद्र-शासित प्रदेशों, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रीय विद्यालय संगठन, जवाहर नवोदय विद्यालय समिति के साथ साझा किया गया और फिर उनके सुझाव प्राप्त करने के बाद इन्हें अंतिम रूप दिया गया है।

हमें आशा है कि यह दस्तावेज़, केंद्र और राज्यों से संबद्ध निकायों/संस्थानों को आकलन की एक सार्वभौमिक दृष्टि उपलब्ध कराएगा, जो प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं, सीखने की गति और शैली के प्रति संवेदनशील होगा। यह कार्य प्रारंभ करने और इसे समय पर पूरा करने के लिए मैं रा.शै.अ.प्र.प. के प्रारंभिक शिक्षा विभाग की सराहना करता हूँ। इसे और बेहतर बनाने के लिए सुझावों का स्वागत है।

नयी दिल्ली
नवंबर 2019

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

आमुख

दीर्घकालिक विकास के लिए वैश्विक कार्यक्रम—2030 के अंतर्गत सभी लक्ष्यों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि जीवनपर्यंत सीखने के लिए समावेशी और उचित गुणवत्तापरक शिक्षा सुनिश्चित की जाए। इस दिशा में पिछले कुछ दशकों में भारत में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विभिन्न प्रयास किए गए हैं।

इन प्रयासों का ही परिणाम है कि विद्यालयों तक बच्चों की पहुँच आसान हुई है, नामांकन बढ़ा है और बहुत हद तक विद्यालय छोड़ने की दर में भी कमी आई है। फिर भी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना और सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति अभी भी मुख्य चुनौतियाँ बने हुए हैं। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS)—2017, प्रारंभिक स्तरों से उच्च प्राथमिक स्तर तक सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति में गिरावट दर्शाता है, जोकि सभी पणधारकों के लिए गंभीर चिंता का विषय है। अतः यह अत्यावश्यक हो जाता है कि अधिगम और पाठ्यचर्या में कहाँ कमी रह गई, इस बात की समय पर और व्यवस्थित रूप से पहचान की जाए, ताकि उचित सुधारात्मक उपाय किए जा सकें और सीखने तथा प्रगति में बच्चों की मदद की जा सके।

गुणवत्ता में सुधार के सभी प्रयास, जैसे कि पाठ्यचर्या में सुधार, शिक्षण-अधिगम सामग्री और अन्य प्रोत्साहन उपलब्ध कराना, तब तक कोई मायने नहीं रखते जब तक कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और आकलन संबंधी रणनीतियों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। पाठ्यचर्या के संदर्भ में क्या संप्रेषित किया जाना है और क्या संप्रेषित किया जा रहा है, इन दोनों के बीच की दूरी को पाटने के लिए छोटी-से-छोटी इकाई (जैसे—विद्यालय और कक्षा) तथा बड़ी-से-बड़ी इकाई (जैसे—देश, राज्य और ज़िला) के स्तरों पर बहुआयामी प्रयास करने की ज़रूरत है। पहले स्तर से वह आकलन जुड़ा है जो कक्षा की परिस्थितियों पर नज़र रखता है, जबकि बाद वाले स्तर में बड़े पैमाने के वे आकलन शामिल हैं, जो मानकीकृत परीक्षणों द्वारा किए जाते हैं और ये परीक्षण शिक्षा-तंत्र की स्थिति की झलक देते हैं। यद्यपि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए बड़े पैमाने वाले और विद्यालय-आधारित, दोनों प्रकार के आकलनों के अपने-अपने लाभ हैं, परंतु इस पूरी प्रक्रिया में विद्यालय-आधारित आकलन की मुख्य भूमिका है। विभिन्न नीति दस्तावेजों ने मूल्यांकन की विद्यालय-आधारित पद्धति के रूप में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की समय-समय पर अनुशांसा की है। इसे निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा (आर.टी.आई.) अधिनियम—2009 की धारा 29 (2) के अंतर्गत आदेशित किया गया है। यह शिक्षकों, माता-पिता/अभिभावकों और बच्चों को सीखने और विकास का नियंत्रण अपने हाथों में लेने की दिशा में एक प्रभावी और शक्तिशाली साधन बन सकता है। बच्चे के समग्र विकास (संज्ञानात्मक के अलावा शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक) को ध्यान में रखते हुए सी.सी.ई. आकलन को शिक्षण-अधिगम के एक अभिन्न घटक के रूप में देखता है। अतः विद्यालय स्तर पर पणधारकों, विशेष रूप से शिक्षकों की क्षमता का विकास करना प्रमुख चुनौती है।

लगभग सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने सी.सी.ई. को विकसित और लागू किया है, जैसा कि आर.टी.ई. अधिनियम—2009 द्वारा आदेशित है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में आर. टी. ई. अधिनियम—2009 द्वारा दिए गए प्रावधानों, जैसे— सी.सी.ई., *नो डिटेंशन पालिसी* (फेल होने पर अगली कक्षा में जाने से न रोकना), प्रारंभिक स्तर तक सार्वजनिक परीक्षाओं को समाप्त करना आदि के विरुद्ध कुछ क्षेत्रों में असहमति और असंतोष के स्वर सुनाई दिए हैं। हम जानते हैं कि पाठ्यचर्या सुधारों के संबंध में सोचे-समझे बिना उठाया गया कोई भी कदम व्यवस्था को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। रा.शै.अ.प्र.प. और यूनिसेफ जैसी एजेंसियों द्वारा सी.सी.ई. पर किए गए

समीक्षात्मक अध्ययनों से भी यही तथ्य सामने आया है। राज्यों तथा केंद्र-शासित प्रदेशों के सी.सी.ई. कार्यक्रमों में पाया गया कि उनके द्वारा लागू किए गए सी.सी.ई. मॉडल कुछ संदर्भों में रचनात्मक (formative) और योगात्मक (summative) आकलनों के समान हैं, हालाँकि इनमें रिकॉर्ड करने, रिपोर्ट करने इत्यादि की अवधि, आवृत्ति के संदर्भ में कुछ भिन्नताएँ भी पाई गईं। यह देखा गया कि सी.सी.ई. को सही रूप में समझा नहीं गया है और सही भावना से लागू भी नहीं किया गया है, क्योंकि सी.सी.ई. की अनेक रूपरेखाएँ ऐसी समस्याओं को सामने ला रही हैं जो न केवल सी.सी.ई. लागू करने को प्रभावित कर रही हैं बल्कि उनका समावेशी और निष्पक्ष शिक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। अतः तर्कपूर्ण रूप से डिजाइन किए गए विद्यालय-आधारित मूल्यांकन अर्थात् सी.सी.ई. को और बाहरी मूल्यांकनों (NAS/SLAS) को न्यायसंगत रूप में उपयोग में लेने के बजाए, गुणवत्ता के स्तर में कमी के लिए दोषी मानना उपयुक्त नहीं होगा।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इन सब कारणों से सी.सी.ई. के एक प्रभावी 'मॉडल' की आवश्यकता महसूस की गई जिसमें शिक्षण-अधिगम तथा आकलन की प्रकृति ऐसी हो जो बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण, शिक्षार्थी-केंद्रित, समावेशी और न्यायसंगत हो। रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न शैक्षिक-क्षेत्रों में आकलन पर *स्रोत पुस्तकें* (2010) और *सी.सी.ई. पर संदर्शिका पैकेज* (2013) आदि को तैयार करके ऐसे ही मॉडलों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* (2017) तैयार किए गए हैं। यह काम आर.टी.ई. अधिनियम का ही हिस्सा था और भारत सरकार के गजट में इसे अधिसूचित भी किया गया था। अतः अब ज़रूरत इस बात की है कि सी.सी.ई. का उन सामग्रियों के साथ तालमेल भी हो। इसके अतिरिक्त जगह-जगह से रा.शै.अ.प्र.प. के लिए यह माँग आ रही थी कि उन्हें कुछ ऐसे दिशानिर्देश दिए जाएँ जो संक्षिप्त हों, इस्तेमाल करने में आसान हों और अधिगम प्रतिफलों के साथ तालमेल रखते हों। साथ ही वे दिशानिर्देश ऐसे हों जो सी.सी.ई. की विभिन्न योजनाओं को एक मंच पर ला सकें ताकि विभिन्न राज्य उन्हें या तो ज्यों का त्यों क्रियान्वित कर सकें या फिर अपनी ज़रूरत के मुताबिक उसमें बदलाव करके काम में ला सकें।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, रा.शै.अ.प्र.प. ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर के लिए सी.सी.ई. पर सामान्य दिशानिर्देश विकसित किए, ताकि विभिन्न पणधारक सी.सी.ई. को प्रभावी रूप से समझ सकें और उपयोग में ला सकें। इस दस्तावेज़ को लगभग सभी राज्यों तथा केंद्र-शासित प्रदेशों और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), केंद्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.), यूनिसेफ़ जैसे संगठनों से प्रतिक्रिया (फ़ीडबैक) प्राप्त करके अंतिम रूप दिया गया।

निम्नलिखित बिंदु आपको सी.सी.ई. पर तैयार इस दस्तावेज़ को समझने और प्रभावपूर्ण तरीके से उपयोग में लेने में मदद करेंगे—

- यह दस्तावेज़ सभी पणधारकों के लिए है, विशेष रूप से उनके लिए जो विद्यालय स्तर से जुड़े हैं, जैसे—शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रमुख और विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य।
- बिना विधानमंडल वाले केंद्र-शासित प्रदेशों और सी.बी.एस.ई. से संबद्ध विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय संगठन और जवाहर नवोदय विद्यालय समिति द्वारा इन दिशानिर्देशों को प्रारंभिक स्तर तक क्रियान्वित किया जाना है।

- राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों के अन्य अकादमिक पदाधिकारी इन्हें अपनी आवश्यकताओं और संदर्भों के अनुसार रूपांतरित करके या उसी रूप से अपना सकते हैं।
- ये दिशानिर्देश राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुरूप हैं।
- ये प्रारंभिक शिक्षा तक के सभी स्तरों और पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों पर लागू होते हैं।
- ये सी.सी.ई. संबंधी भ्रांतियों (यदि कोई हों) को दूर करने में शिक्षा से जुड़े विभिन्न कार्यकर्ताओं और संस्थाओं की मदद करेंगे।
- विद्यालय-आधारित मूल्यांकन को मजबूत बनाने से राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों को अपने क्षेत्र में बड़े पैमाने पर किए जाने वाले मूल्यांकन में अपनी उपलब्धि-स्तर को बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- ये मार्गदर्शी सुझाव सी.सी.ई. पर एक सुसंगत और पक्की समझ बनाते हैं। इससे पणधारकों को विद्यालय-आधारित मूल्यांकन को मजबूत करने में मदद मिलेगी। ये बच्चों द्वारा सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने और अंततः राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण या बड़े पैमाने पर किए जाने वाले ऐसे ही अन्य मूल्यांकन में उनकी उपलब्धि को प्रभावशाली बनाएंगे।
- यह दस्तावेज रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित संसाधन सामग्री, जैसे कि पाठ्यपुस्तकों, स्रोत पुस्तकों, संदर्शिकाओं (छपी हुई और वेबसाइट पर) से जुड़ा हुआ है और इसे अलग से नहीं देखा जाना चाहिए।
- इस दस्तावेज को आसानी से इस्तेमाल में लाया जा सके, इसके लिए इसमें यथासंभव बहुत ही आसान भाषा का प्रयोग किया गया है। इस दस्तावेज को 5 अध्यायों और 2 परिशिष्टों में विभाजित किया गया है। अध्याय 1, 2 और 3 उन सैद्धांतिक उद्देश्यों के बारे में जानकारी देते हैं, जिनसे सी.सी.ई. क्या है, क्यों है, इसके क्या मानदंड होंगे आदि पहलुओं पर समझ बनती है।
- अध्याय 4 में सी.सी.ई. के 'कैसे' पहलू पर रोशनी डाली गई है, जबकि अध्याय 5 किसी कार्य विशेष का मूल्यांकन करने के लिए 'रूब्रिक' (मानदंडों का एक खाका) के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- अंत में दो परिशिष्टों में, बच्चे की प्रगति को दर्ज करने और उसकी सूचना संप्रेषित करने के लिए सुझावात्मक प्रपत्र (फॉर्मेट) दिए गए हैं।
- दिए गए चित्र और सारणियाँ विभिन्न अवधारणाओं को समझने में मदद करेंगी।
- विभिन्न स्थानों पर प्रयोग किए गए 'कठिन' शब्दों को अलग से खानों (बॉक्स) में दर्शाकर उन्हें उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया गया है।
- ये दिशानिर्देश एक ऐसा समान धरातल उपलब्ध कराते हैं जो सैद्धांतिक रूप से ठोस है और व्यावहारिक रूप से विद्यालय-आधारित आकलन पद्धति को मजबूत करने में समर्थ है।
- ये दिशानिर्देश शिक्षण-अधिगम और आकलन के बाल-केंद्रित और बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण पहलुओं पर आधारित हैं, इनका लक्ष्य यह है कि विद्यालय और बच्चों के बीच, अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच सहज-सरल संबंध बनें।

- बच्चों के अधिगम और विकास की प्रगति को दर्ज करने और उन्हें संप्रेषित करने के तरीकों को सरल किया गया है ताकि शिक्षक और बच्चे सीखने-सिखाने में अधिक से अधिक समय दे सकें।
- ये दिशानिर्देश संयुक्त (cluster), जिला, राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर आकलन के अभिलेखों के संकलन का समर्थन किसी भी रूप में नहीं करते हैं।
- ये दिशानिर्देश सभी बच्चों के लिए हैं और ये शिक्षकों को एक समावेशी व्यवस्था में सी.सी.ई का उपयोग करने हेतु सक्षम बनाएंगे।
- प्राचार्य/प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधन समितियों के सदस्यों और यहाँ तक कि अभिभावकों को भी इन दिशानिर्देशों के बारे में जागरूक और संवदेनशील बनाने की आवश्यकता है।

निर्माण समिति

अध्यक्ष

हृषिकेश सेनापति, प्रोफेसर एवं निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

समीक्षा समिति

अंजुम सिबिया, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

अनुपम अहूजा, प्रोफेसर, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

अनूप कुमार राजपूत, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली
इंद्राणी भादुड़ी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

ए.डी. तिवारी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, योजना एवं अनुवीक्षण विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

एम. वी. श्रीनिवासन, एसोसिएट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

शरद सिन्हा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान परियोजना प्रकोष्ठ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

अनुवादक

के.के. शर्मा, प्रिंसिपल (सेवानिवृत्त), शिक्षा कॉलेज, अजमेर

सदस्य समन्वयक

कविता शर्मा, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

आभार

सी.सी.ई. दिशानिर्देशों के इस दस्तावेज़ पर सुझाव/प्रतिक्रिया देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. सभी राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों के प्रति आभार प्रकट करती है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लेने हेतु, परिषद् अग्रलिखित राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों— अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, चंडीगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, ओडिशा, पुदुच्चेरी, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिमी बंगाल और दिल्ली के प्रतिनिधियों की आभारी है। दिशानिर्देशों के प्रारूप पर इनके टिप्पणियों और सुझावों ने उन्हें अंतिम रूप देने में सहायता की है।

इन दिशानिर्देशों पर सहयोग और सुझावों के लिए परिषद् केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रीय विद्यालय संगठन और जवाहर नवोदय विद्यालय समिति को भी धन्यवाद देती है। राष्ट्रीय बैठक के आयोजन में मदद के लिए यूनिसेफ़ भी धन्यवाद की पात्र है। रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों को भी धन्यवाद दिया जाता है, जिन्होंने दिशानिर्देशों पर अपने सुझाव दिए। उनके सुझावों को यथास्थान इस दस्तावेज़ में सम्मिलित किया गया है। परिषद्, शोएब अबदुल्ला, प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त), आई.ए.एस.ई., शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली और संतोष शर्मा, (सेवानिवृत्त) प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या समूह, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली को रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक के समय अपने मूल्यवान सुझाव और योगदान देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती है। गुरजीत कौर, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, आई.ए.एस.ई., शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली को परामर्श बैठक के समय और उसके बाद, उनके द्वारा दी गई महत्वपूर्ण मदद के लिए परिषद् विशेष धन्यवाद देती है।

इस दस्तावेज़ की हिंदी अनुवाद समीक्षा के लिए शारदा कुमारी, प्रिंसिपल, डाइट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली, योगेश कुमार, प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली, माधवी कुमार, रीडर (सेवानिवृत्त), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली, रीतू चन्द्रा, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली तथा अक्षय कुमार दीक्षित, प्राइमरी शिक्षक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली की परिषद् आभारी है। इस दस्तावेज़ के संपादन में कामिनी भटनागर, एसोसिएट प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त), एजुकेशनल मीडिया, सी.आई.ई.टी. (रा.शै.अ.प्र.प.), नरेश यादव, संपादक (सेवानिवृत्त), शशी चड्ढा, सह-संपादक (सेवानिवृत्त), मीनाक्षी, सहायक संपादक (संविदा), प्रकाशन प्रभाग (रा.शै.अ.प्र.प.) ने भरपूर योगदान दिया। इसके साथ ही प्रूफ़रीडिंग के लिए रवि रंजन, प्रूफ़रीडर (संविदा), प्रकाशन प्रभाग (रा.शै.अ.प्र.प.) का आभार व्यक्त किया जाता है। परिषद् इस दस्तावेज़ को यह रूप देने के लिए किशोर सिंघल और कीर्ति, डी.टी.पी. ऑपरेटर एवं राकेश कुमार, टाइपिस्ट को भी धन्यवाद देती है। इसके अलावा प्रारंभिक शिक्षा विभाग में कार्यरत चारु सैनी, वरिष्ठ परामर्शदाता एवं शिवाली गौतम, एस.आर.ए. का इस कार्य को पूरा करने में विशेष योगदान रहा।

विषय वस्तु

प्राक्कथन	iii
आमुख	v
अध्याय 1 सी.सी.ई.—नीतिगत परिप्रेक्ष्य	1
1.1 सी.सी.ई. के नीतिगत पहलू	
1.2 सी. सी. ई. का संदर्भ—शिक्षा का अधिकार	
अध्याय 2 सी.सी.ई.—क्या और क्यों?	6
2.1 सी.सी.ई.—कुछ तर्क	
2.2 अधिगम और आकलन	
2.2.1 सीखने की प्रकृति	
2.2.2 आकलन की प्रकृति	
2.3 सी. सी. ई. क्या संकेत देता है	
अध्याय 3 सी.सी.ई.—किन पहलुओं का हो आकलन?	15
अध्याय 4 कब, कहाँ और कैसे करें सी.सी.ई.?	18
4.1 सी.सी.ई. की प्रक्रिया	
4.2 बाल-हितैषी परिवेश सुनिश्चित करना	
4.3 बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम और आकलन	
4.3.1 शिक्षण-अधिगम और आकलन की योजना बनाना और आयोजन करना	
4.3.2 रिकॉर्ड करना और रिपोर्ट करना	
4.4 शिक्षक विकास और व्यवस्थागत मुद्दे	
4.4.1 सी.सी.ई. के लिए शिक्षकों का व्यावसायिक विकास	
4.4.2 व्यवस्थागत मुद्दे	
4.5 याद रखने योग्य बातें	
अध्याय 5 रूब्रिक्स—कुछ उदाहरण	38
परिशिष्ट	41
बच्चे की प्रगति को रिकॉर्ड और रिपोर्ट करने के लिए प्रस्तावित प्रारूप	

संक्षिप्त रूप

आर.टी.ई.	शिक्षा का अधिकार (Right to Education)
आई.पी.सी.	भारतीय दंड संहिता (Indian Penal Code)
आई.ए.एस.ई.	उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (Institute of Advanced Studies in Education)
एस.टी.	अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribe)
एस.सी.	अनुसूचित जाति (Scheduled Caste)
एस.एम.सी.	विद्यालय प्रबंधन समिति (School Management Committee)
एस.एल.ए.एस.	राज्य स्तरीय उपलब्धि सर्वेक्षण (State Level Achievement Survey)
एन.पी.ई.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Policy on Education)
एन.सी.एफ.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (National Curriculum Framework)
एन.ए.एस.	राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (National Achievement Survey)
ओ.बी.सी.	अन्य पिछड़ा वर्ग (Other Backward Class)
के.जी.बी.वी.	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya)
के.वी.एस.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन (Kendriya Vidyalaya Sangathan)
जे.एन.वी.एस.	जवाहर नवोदय विद्यालय समिति (Jawahar Navodaya Vidyalaya Samiti)
पी.ओ.ए.	कार्रवाई कार्यक्रम (Programme of Action)
पी.एस.क्यू.	व्यक्तिगत सामाजिक गुण (Personal Social Qualities)
पी.टी.एम.	अभिभावक शिक्षक बैठक (Parent Teacher Meeting)
यू.एन.सी.आर. पी.डी.	निःशक्तायुक्त व्यक्तियों के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Convention on Right of Persons with Disabilities)
यूनिसेफ़	संयुक्त राष्ट्र बाल निधि (United Nations Children's Fund)
रा.शै.अ.प्र.प.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (National Council of Educational Research and Training)
सी.बी.एस.ई.	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (Central Board of Secondary Education)
सी.सी.ई.	सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation)

शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में आकलन की महत्वपूर्ण भूमिका है और यह विभिन्न पणधारकों (stakeholders) की कई प्रकार से सहायता करता है। यह पता लगाकर कि बच्चे कितना सीख रहे हैं, सी.सी.ई. विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, प्रशिक्षकों, नीति-निर्माताओं आदि को विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह विद्यालय या कक्षा स्तर पर पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र और शिक्षक की भूमिकाओं को सक्रिय करता एवं जोड़ता है। यह कक्षागत प्रक्रियाओं को इस प्रकार प्रभावित करता है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार आए जिससे प्रत्येक बच्चे को समग्र रूप से सीखने और विकसित होने के पर्याप्त अवसर मिल सकें। “ज्ञान विस्फोट” (knowledge explosion) के इस युग में और “ज्ञान-प्रधान समाज” की निरंतर बदलती आवश्यकताओं के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि वे कौशल प्राप्त किए जाएँ जो “सीखना” सिखा सकें। वर्तमान में समाज की निरंतर बदलती आवश्यकताओं के साथ कदम मिलाने के लिए ज़रूरी है कि विभिन्न विषयों को उनकी सीमाओं से ऊपर उठकर उन्हें एकीकृत रूप में देखा और समझा जाए ताकि जीवन की वास्तविक समस्याओं के सुलझाने की ओर बढ़ा जा सके। इसलिए आकलन की प्रक्रिया ऐसी हो जो उच्च कोटि चिंतन के कौशलों (higher order thinking skills) को विकसित कर सके। साथ ही आकलन, दिव्यांगताओं (disabilities), पूर्वाग्रहों (biases) व पूर्व-निर्मित धारणाओं (pre-conceived notions) से जुड़ी अपनी समस्याओं को सुलझाने का भी एक प्रभावी साधन है। सभी बच्चे एक ही तरह से नहीं सीखते हैं और न ही समान रास्ता अपनाते हैं, क्योंकि सीखना न तो एकसमान होता है और न ही अपने-आप में लक्ष्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात क्षमताएँ दूसरों से अलग होती हैं। आकलन बच्चों की इन जन्मजात क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए। आवश्यकता है तो बच्चों की स्वाभाविक क्षमताओं और उनकी सीखने की क्रियाओं की पहचान करने की, जिससे उनके ज्ञान, कौशल एवं प्रवृत्तियों के विकास को उचित अवसर दिए जा सकें। इससे आकलन वैयक्तिक, समग्र और सीखने-सिखाने का अभिन्न अंग बन जाता है। इसके विपरीत जो परीक्षाएँ सबके लिए एकसमान रूप से आयोजित की जाती हैं, उनका दृष्टिकोण सीमित और “भविष्य-सूचक प्रकृति” वाला होता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि ये किसी निश्चित समय पर ज्ञान के बहुत सीमित पक्ष का मापन करती हैं। यह सीमित मापन, शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में बच्चे की प्रगति या उसकी योग्यताओं का पूरा ब्योरा देने के लिए बहुत अपर्याप्त होता है। कक्षा या विद्यालय आधारित आकलन, सीखने की प्रक्रिया को निरंतर बढ़ाते हुए बच्चों को न केवल प्रगति की ओर अग्रसर करता है, अपितु बाहरी परीक्षा के भय को भी दूर करता है।

इस संदर्भ में, अप्रैल 2010 से लागू निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम—2009 के अनुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) को एक विद्यालय-आधारित मूल्यांकन प्रणाली के

रूप में शुरू किया गया। इस अधिनियम के अनुसार सी.सी.ई. को प्रारंभिक स्तर तक लागू किया जाना अनिवार्य है।

बाहरी परीक्षा की प्रधानता को कम करने के लिए यह अधिनियम प्रत्येक पणधारक विशेषकर शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक न केवल इसकी सार्थकता को समझें बल्कि हर बच्चे के संपूर्ण विकास में इसका भरपूर उपयोग भी करें।

1.1 सी.सी.ई. के नीतिगत पहलू

भारत सरकार द्वारा स्थापित शिक्षा आयोग (1964–66) के परीक्षा सुधारों को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार बच्चों के सीखने की प्रगति का आकलन, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इसमें उल्लेख किया गया है कि सी.सी.ई. को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में इस प्रकार लागू किया जाए जिससे शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक पहलुओं को समग्र रूप से देखते हुए स्कूली व्यवस्था में अंकों के स्थान पर ग्रेड द्वारा आकलन करने पर बल दिया जाए। इसमें बाहरी परीक्षा की प्रधानता को कम करने पर तथा स्कूली स्तर पर मूल्यांकन को सरल और कारगर बनाने के लिए कहा गया है। कार्यक्रम कार्यान्वयन (Programme of Action)—1992 ने विद्यालय-स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के कार्यान्वयन के लिए एक रूपरेखा तैयार की। इसके बाद विकसित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की सभी रूपरेखाओं ने एक ऐसी मूल्यांकन पद्धति की अनुशंसा की जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हो, ताकि बच्चे को किसी भी प्रकार की अनुचित पीड़ा, चिंता, उत्पीड़न और अपमान से बचाया जा सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2000 ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों के सीखने संबंधी उपलब्धियों के आकलन के लिए अंकों के बजाय ग्रेड दिए जाएँ और ग्रेड देने के लिए मूल्यांकन की किसी एक तकनीक पर निर्भर न रहकर विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया जाए। एन.सी.एफ. 2005 ने बच्चों को एक सहज शिक्षार्थी के रूप में प्रस्तुत किया। एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं। वे अपने परिवेश से अंतःक्रिया कर स्वयं ज्ञान सृजन करते हैं। इसलिए उनके अपने अनुभवों एवं राय को प्राथमिकता देते हुए उन्हें अपनी जिज्ञासा पोषित करने के भरपूर अवसर दिए जाएँ। एन.सी.एफ. 2005 में बल दिया गया है कि बच्चों को अपनी सोच का पता लगाने और अपनी जिज्ञासा को पोषित करने के अवसर दिए जाएँ। जब बच्चे अपने आस-पास की दुनिया के साथ सक्रियता से संलिप्त होंगे, तब इसके प्रतिफल के रूप में वे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करेंगे। मनोवृत्तियों, भावनाओं और मूल्यों को संज्ञानात्मक विकास का अभिन्न अंग मानते हुए, एन.सी.एफ. 2005 विद्यालय-स्तर पर सीखने-सिखाने और आकलन के दौरान उन्हें समग्र रूप से देखने की अनुशंसा करता है। इस प्रकार, पिछले कई दशकों से विभिन्न नीति-दस्तावेजों द्वारा सी.सी.ई. की एक विद्यालय-आधारित आकलन प्रणाली के रूप में अनुशंसा की गई है, जो कि आंतरिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चों के समग्र विकास की जानकारी दे सकता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के “सतत” से आशय सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान चलने

वाले आकलन से है जो सत्र के अंत में होने वाले आकलन के साथ-साथ समय रहते यह संकेत दे देता है कि शिक्षण में और सीखने में कहाँ-कहाँ सुधार की ज़रूरत है। विशिष्ट पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों को शामिल करते हुए, बच्चे के समग्र विकास को ध्यान में रखने को “व्यापकता” के रूप में देखा जाता है।

सी.सी.ई. की अनुशंसा इसलिए की गई थी कि सीखने की आवश्यकताओं को समझने में आ रही कठिनाइयों की पहचान की प्रक्रिया में संवर्द्धन करने और चिंता एवं तनाव दूर करने में समय रहते समुचित उपाय करने में मदद मिलेगी। इसका यह भी एक उद्देश्य है कि रटने की प्रवृत्ति को कम किया जाए, शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण पर विचार-विमर्श किया जाए, उसकी समीक्षा की जाए और उसमें सुधार किया जाए, सभी बच्चों को उनके सीखने में सुधार के लिए फ़ीडबैक दिया जाए। यह व्यवस्था विशेष आवश्यकता वाले और वंचित वर्गों से संबंध रखने वाले बच्चों के लिए भी लागू है। हालाँकि इस व्यवस्था को संदर्भ के अनुरूप विभिन्न साधनों के द्वारा और अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है।

1.2 सी.सी.ई. का संदर्भ—शिक्षा का अधिकार

विभिन्न नीति-दस्तावेजों द्वारा समय-समय पर की गई अनुशंसाओं के बावजूद, शिक्षा का अधिकार अधिनियम—2009 लागू होने के बाद ही सी.सी.ई. को गंभीरता से लिया गया और इस पर चर्चाएँ भी होने लगीं। यह अधिनियम 6 से 14 वर्ष के प्रत्येक बच्चे को यह अधिकार देता है कि उन्हें निश्चित मानदंडों और मानकों को पूरा करने वाले औपचारिक विद्यालय में संतोषजनक और न्यायोचित गुणवत्ता वाली प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के अवसर मिलें। शिक्षा का अधिकार अधिनियम—2009 का अनुभाग 29(2) इस बात पर बल देता है कि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो, उनके ज्ञान, सामर्थ्य और कौशलों का विकास हो और यह सब कुछ इस प्रकार से हो कि बच्चे विभिन्न गतिविधियों से जुड़कर अपनी शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का पूरा-पूरा विकास कर सकें, खोजबीन संबंधी गतिविधियों में जुड़ सकें और यह सब भय एवं चिंतामुक्त परिवेश में सी.सी.ई. का प्रयोग इस दायित्व की दृष्टि से किया जाए जिसमें प्रत्येक बच्चे को पढ़ने और जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलने चाहिए तथा इस काम में उसे पूरी मदद दी जानी चाहिए। सी.सी.ई., सभी बच्चों के लिए पढ़ना सुनिश्चित करके, शिक्षा का अधिकार अधिनियम की भावना का मान रखने के लिए एक प्रभावशाली साधन हो सकता है। शिक्षक को इस आकलन द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, बच्चे की प्रगति को समझने में मदद मिलेगी और बच्चे के सीखने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए समय पर सहायता और फ़ीडबैक देने में भी सहायता मिल सकेगी। इस तरह से, फ़ेल करने और वर्ष के अंत में बच्चे को उसी कक्षा में रोके रखने की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। अतः यह समझना महत्वपूर्ण है कि सीखने-सिखाने तथा आकलन, दोनों प्रक्रियाओं में तालमेल ज़रूरी है। विद्यार्थियों के अधिगम और विकास की सही जानकारी प्राप्त करने और शिक्षा के वांछित लक्ष्यों को पूरा करने में उनकी सहायता करने के लिए दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

शिक्षा के अधिकार को लागू हुए कुछ वर्ष हो गए हैं और तब से विभिन्न राज्यों, केंद्र-शासित प्रदेशों तथा विद्यालयी शिक्षा को संचालित करने वाले अन्य निकायों से संबंधित अकादमिक अधिकारियों द्वारा सी.सी.ई. की विभिन्न योजनाएँ लागू कर दी गई हैं। परंतु अभी तक हुए अनुसंधानों और कार्यक्षेत्र के अनुभवों से पता चला है कि विभिन्न पणधारकों को सी.सी.ई. की इन योजनाओं को उपयोग में लाते हुए समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि ये योजनाएँ आकलन के शोध-आधारित सतत और व्यापक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं। शिक्षक अधिकतर आँकड़े इकट्ठा करने और बच्चों का प्रगति रिकॉर्ड रखने जैसे कामों में ही लगे रहते हैं, इसलिए ये योजनाएँ शिक्षकों को बहुत बोझिल लगती हैं। इससे न केवल आकलन की प्रक्रिया कठिन हो जाती है, बल्कि इससे आकलन का उद्देश्य भी पूरा नहीं हो पाता, क्योंकि सीखने-सिखाने का मूल्यवान समय नष्ट हो जाता है। लगातार टेस्ट देते रहना और दूसरों की तुलना में परखे जाना बच्चों में भय और चिंता का भाव पैदा कर रहा है। शिक्षकों, विद्यार्थियों, माता-पिता या अभिभावकों और विभिन्न स्तरों पर कार्यरत कर्मियों द्वारा सी.सी.ई. के विभिन्न पहलुओं पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर न मिलने से और इनकी अलग-अलग व्याख्याएँ करने से सी.सी.ई. सही मायनों में लागू नहीं हो पाया। इन योजनाओं के अनुसार सी.सी.ई. का जो स्वरूप लागू है, वह न तो नीतिगत परिप्रेक्ष्यों के अनुरूप है और न ही हितधारकों के पक्ष में है।

बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और उन्हें समग्र रूप से विकसित होने के लिए यह ज़रूरी है कि उनकी सीखने की प्रगति के बारे में सी.सी.ई. द्वारा पता किया जाए जिससे नीचे लिखे बिंदुओं में विशेष सहायता मिल सकेगी।

- बच्चे के अधिगम और विकास में हुए परिवर्तनों का पता लगाना और उनकी सही-सही पहचान करना।
- हर बच्चे को सीखने के लिए कहाँ और कैसी मदद की ज़रूरत है, इसकी पहचान करना।
- बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने-सिखाने की योजना बनाना जिससे उनका बेहतर अधिगम और विकास हो।
- स्व-आकलन के अवसर देते हुए बच्चों में अपने काम की समीक्षा करके अधिगम को बेहतर करने की क्षमता का विकास करना।
- यह पता लगाना कि पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं और सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पायी है।
- बच्चों के अधिगम और विकास की कमियों को पूरा करने के लिए कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को दुरुस्त करना।
- माता-पिता, अभिभावकों एवं अन्य पणधारकों को बच्चों की प्रगति के बारे में साक्ष्य-आधारित फ़ीडबैक देना और उन्हें बच्चे के अधिगम तथा विकास में रचनात्मक रूप से शामिल करना।
- आकलन के भय को दूर करते हुए हर बच्चे को सीखने हेतु लगातार प्रोत्साहित करना एवं उनमें आत्मविश्वास जगाना।

अधिगम का मुख्य उद्देश्य बच्चों के सर्वांगीण विकास को अर्थात् संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक आयामों का समग्रता से विकास करना है। इस संदर्भ में सी.सी.ई. के निम्नलिखित पहलुओं को विस्तार से समझना ज़रूरी है—

- विभिन्न पणधारकों की सी.सी.ई. के बारे में क्या समझ है?
- सी.सी.ई. को क्यों अपनाया जाए?
- सी.सी.ई. के अंतर्गत आकलन कौन करेगा और क्या आकलन करेगा?
- आकलन किस प्रकार किया जाएगा?
- आकलन कब किया जाएगा?
- सी.सी.ई. के अंतर्गत प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है?

इस पृष्ठभूमि में यह दस्तावेज़ उक्त प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है और सी.सी.ई. पर दिशानिर्देश उपलब्ध कराता है। ये दिशानिर्देश आकलन के अनुभव एवं शोध-आधारित सिद्धांतों पर बने हैं और आर.टी.ई. अधिनियम के अनुरूप हैं। इस दस्तावेज़ में विद्यालयी स्तर पर सी.सी.ई. लागू करने की प्रक्रिया भी शामिल है। जैसा पहले बताया गया है (आमुख देखें) अगले अध्यायों में दी गई विषयवस्तु, इस प्रक्रिया को विस्तार से बताती है।

2

सी.सी.ई.—क्या और क्यों?

2.1 सी.सी.ई.—कुछ तर्क

पिछले कुछ दशकों से प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता के गिरते स्तर के बारे में अकसर चिंता जताई जाती रही है। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए और हर बच्चे के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए यह ज़रूरी है कि सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त संसाधन एवं परिवेश दिए जाएँ ताकि हर बच्चा एक निश्चित अवधि (शैक्षिक सत्र) में उन्हें प्राप्त कर सके।

इसके लिए आवश्यक है कि उपयुक्त बुनियादी संरचना, पाठ्यचर्या, प्रशिक्षित शिक्षक, शिक्षण विधियाँ, आकलन, विद्यालय कार्य-दिवस, शिक्षण-अवधि, निरीक्षण तथा मूल्यांकन सहित शिक्षकों के सशक्तीकरण के मुद्दे आदि में सुधार के लिए प्रावधान किए जाएँ। बाल-अनुकूल वातावरण में बाल-केंद्रित पाठ्यचर्या, सीखना-सिखाना और आकलन, शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित कर सकता है। विद्यालय और कक्षा का वातावरण, शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात, विषय-विशेष के अध्यापक, विद्यालय और कक्षा की प्रक्रियाएँ और पद्धतियाँ, आकलन विधियाँ और बुनियादी संरचना संबंधी अनेक कारक हैं, जो इस दिशा में योगदान करते हैं। गुणवत्ता प्राप्ति की दिशा में ठोस अंतर लाने के लिए हर स्तर पर सचेत एवं सामूहिक प्रयासों की भरपूर आवश्यकता है।

शुरुआती वर्षों की शिक्षा का समय बच्चों के विकास का निर्माणात्मक समय होता है। इस अवधि में वे 'असफलताओं' की अवधारणा को समझने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं होते। अतः सभी आवश्यक कारकों को उपलब्ध कराए बिना ही न सीखने की स्थिति के लिए बच्चों को जिम्मेदार ठहराना पूर्ण रूप से अनुचित है। सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन बच्चों का संतुलित व्यक्तित्व बनाने में मदद करते हैं, जबकि भय और अपमान उन्हें निष्प्रेरित और हतोत्साहित करते हैं। सभी पणधारकों (stakeholders) सहित, इस व्यवस्था का उत्तरदायित्व है कि वह आवश्यक संसाधनों को सुनिश्चित करे; चाहे वे मात्रात्मक उपाय हों (विद्यालय, कक्षा, शिक्षक, आदि) या गुणात्मक (पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री, कक्षा वातावरण और प्रक्रियाएँ आदि) उपाय हों, जिससे प्रत्येक बच्चा बिना परेशान हुए, अपमानित हुए या लेबल लगे (labelling) बिना गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करे। यदि आकलन में परीक्षा द्वारा बच्चों की लेबलिंग करते हुए उन्हें प्रताड़ित किया जाता है तो वे भय और चिंता जैसी भावनाओं से ग्रस्त होते हैं। चूँकि सीखने के विभिन्न पहलू होते हैं इसलिए किसी भी प्रकार की वार्षिक या बाह्य परीक्षा बच्चों के व्यक्तित्व का सही आकलन नहीं करती। सतत आकलन, न केवल बच्चों का समग्र विकास करता है, अपितु शिक्षकों और समस्त शैक्षिक तंत्र की सही रूपरेखा निर्धारित भी करता है, जिससे शिक्षक विभिन्न पणधारकों की मदद से उपयुक्त साधनों को जुटा कर अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर चिंतन-मनन कर उसमें सुधार ला सकते हैं। यह शिक्षकों

को उन क्षेत्रों की पहचान करने में सक्षम बनाता है, जहाँ उन्हें अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर विचार करने के लिए मदद की ज़रूरत है और जहाँ उन पर पुनर्विचार करना है या उसमें सुधार करना है। इसके अलावा जहाँ विभिन्न पणधारकों द्वारा उपयुक्त सुधारों या प्रावधानों को उपलब्ध करवाने के लिए मदद की आवश्यकता है, उन क्षेत्रों की पहचान करने में भी यह शिक्षकों को सक्षम बनाता है।

इस संदर्भ में सी.सी.ई. को आर.टी.ई. एक्ट के तहत प्रारंभिक स्तर पर अनिवार्य किया गया है जिसका एकमात्र उद्देश्य बच्चों की शिक्षा में सुधार करना है, ताकि उनका संपूर्ण विकास संभव हो सके। हालाँकि पिछले कुछ दशकों के प्रयासों से शिक्षा के मात्रात्मक पहलुओं, जैसे—स्कूलों, कक्षा एवं शिक्षकों की संख्या, नामांकन आदि में काफ़ी सुधार आया है परंतु गुणात्मक पहलुओं में संतोषजनक सुधार नहीं हो पाया। ऐसा मुख्यतः शिक्षण-अधिगम एवं आकलन प्रक्रिया पर समुचित ध्यान न देने के कारण हुआ। हम आकलन एवं शिक्षण-अधिगम को एकीकृत रूप में न देखकर एक-दूसरे से पूरी तरह अलग ही देखते रहे हैं।

2.2 अधिगम और आकलन

अधिगम और आकलन की प्रक्रिया एक-दूसरे से जुड़ी है, उन्हें अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इससे पहले कि हम सी.सी.ई. की प्रक्रिया को जानें, यह महत्वपूर्ण है कि सीखने और आकलन की प्रकृति को पहचाना जाए। साथ ही यह भी समझें कि बच्चे प्रारंभिक स्तर पर कैसे सीखते हैं। इसी समझ के आधार पर तय होगा कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों का आकलन कैसे हो सकता है? सीखने और आकलन संबंधी कुछ महत्वपूर्ण पहलू नीचे दिए गए हैं—

2.2.1 सीखने की प्रकृति

(क) सीखना एक सतत प्रक्रिया है—सीखना एक निरंतर प्रक्रिया है जो कि केवल कक्षा तक ही सीमित नहीं होती बल्कि कक्षा एवं स्कूल के बाहर भी लगातार चलती है। सीखना हर समय चलता रहता है। बच्चों की अपने परिवेश, परिवार और समाज के साथ अंतःक्रिया ही उनके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए कक्षा एवं किताबी ज्ञान को उनके वास्तविक जीवन से जोड़ने की भी बहुत आवश्यकता है। अतः आकलन प्रक्रिया में ऐसी परिस्थितियों को शामिल करना भी ज़रूरी है। विविध परिस्थितियों में आकलन प्रक्रिया ऐसी हो जिससे बच्चे अपने जीवन के वास्तविक अनुभवों को शामिल कर सकें।

(ख) सीखना चक्रीय (spiral) होता है—सीखना एक रैखिक प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि बच्चे अपने ज्ञान का सृजन पिछली कक्षाओं से संबंधित विषयों/संकल्पनाओं को फिर से जानते और समझते हुए करते हैं। इससे पिछले सीखे हुए और नए ज्ञान के बीच संबंध जुड़ता है। इसी प्रकार रोज़मर्रा के सीखने में शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों के पूर्व-अनुभवों और अपेक्षित ज्ञान के बीच संबंध जोड़ते हुए अधिगम स्थितियों का सृजन करें।

इसके लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षार्थियों के पूर्व-ज्ञान का सही आकलन कर अधिगम के ऐसे अवसर प्रदान करें जो बच्चों की क्षमताओं के अनुसार हों और परिवेश से जुड़े हों। यह तभी संभव है जब उन्हें अपनी गति और शैली के अनुसार सीखने के मौके दिए जाएँ क्योंकि सभी बच्चे अपने आप में अद्वितीय हैं और अपनी ही गति से सीखते हैं। यह बात केवल विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए ही नहीं अपितु सभी शिक्षार्थियों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, हर बच्चे के मूर्त से अमूर्त और सरल से जटिल अधिगम की ओर बढ़ने के लिए आकलन प्रक्रिया ऐसी हो जो उनकी पूर्व जानकारी और अपेक्षित ज्ञान के बीच के अंतर को समझने में मदद करे और समय रहते उन कमियों को दूर करने में सहायक हो। एक चिंतनशील शिक्षक द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की गतिविधियों का सतत एवं सूक्ष्म अवलोकन बच्चों के अधिगम को बढ़ाने के लिए उन्हें अपनी शिक्षण प्रक्रिया की योजना बनाने और उस पर चिंतन मनन करने में मदद करता है।

(ग) सीखने की समग्र (Holistic) प्रकृति—बच्चे अपने आसपास की दुनिया को किसी विषय-विशेष या किसी अन्य खाँचे में सीमित न रखते हुए समग्र रूप से सीखते हैं। अनुभव-आधारित बहुसंवेदी अधिगम जो कि खेल, खोजबीन, करके देखने जैसी गतिविधियों पर आधारित होता है, यह न केवल आनंददायी है अपितु बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित भी करता है। साथ ही यह विभिन्न स्रोतों से जुटाए गए ज्ञान के एकीकरण में मदद करता है।

2.2.2 आकलन की प्रकृति

आकलन, सीखने-सिखाने को सुदृढ़ करके सीखने को तब बढ़ावा देने का कार्य करता है, जब शिक्षक विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में निरंतर शामिल करके और उनके विचारों/सुझावों को लेते हुए, उनकी रुचियों, योग्यताओं और सीखने की प्रगति पर प्रासंगिक जानकारी के माध्यम से अपनी शिक्षण योजनाओं को आवश्यकतानुसार ढालते हैं। इसका उद्देश्य उस लक्ष्य को हासिल करना है, जब बच्चे स्वयं सीखने और जागरूकता के मार्ग पर चलने के कौशल और योग्यताएँ विकसित कर लें। समसामयिक अनुसंधान आकलन के तीन मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डालता है, जिनमें 'सीखने के लिए आकलन', 'सीखने के रूप में आकलन' और 'सीखने का आकलन' शामिल हैं।

बच्चे के समग्र विकास (संज्ञानात्मक के अलावा शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक) पर विचार करते हुए (जैसा कि आर. टी. ई. अधिनियम के अंतर्गत आदेशित है), यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों के सीखने और आकलन के केंद्र में ज्ञान के अतिरिक्त विभिन्न कौशल, सरोकार, मूल्य, प्रवृत्तियाँ और संवेदनशीलताएँ शामिल हों। समग्रता में होने वाला विकास बच्चों को इन सबको आत्मसात करने में मदद करता है। शिक्षकों को उनके सीखने की आवश्यकताओं और कमियों का पता लगाने के लिए निरंतर उनका आकलन करना जरूरी है। इसके लिए विभिन्न स्रोतों से साक्ष्य या जानकारी इकट्ठी की जा सकती है और नियमित तथा समय पर फ़ीडबैक उपलब्ध कराने हेतु मॉनीटरिंग भी की जा सकती है। इनके आधार पर ही सीखने-सिखाने की योजना बननी चाहिए (सीखने के लिए आकलन)। बच्चों में स्व-आकलन और स्वयं सीखने की क्षमता

निर्मित करने (सीखने के रूप में आकलन) और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करने के लिए, स्वयं के द्वारा और साथियों के द्वारा चिंतन के अवसरों के सृजन की आवश्यकता होती है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों सहित, सभी बच्चों में दक्षता का बोध कराने और उन्हें यह जानने में मदद करने के लिए कि वे किस स्थिति में हैं और उन्हें कहाँ होना चाहिए, उनकी प्रगति को निश्चित अंतरालों पर (सीखने का आकलन) उनके साथ और उनके अभिभावकों (या अन्य पणधारकों जो बच्चों की प्रगति के लिए भरपूर योगदान कर सकते हों) के साथ, उनके सीखने और व्यक्तित्व का व्यापक चित्रण करते हुए साझा करने की आवश्यकता है। ऐसा करना विद्यालय में और विद्यालय से बाहर उनके ज्ञान, बोध, कौशलों, रुचियों, मनोवृत्तियों, अभिप्रेरणा आदि पर इकट्ठी की गई जानकारी के माध्यम से उनकी प्रगति के मानचित्रण से संभव है। यह सब तभी हो सकता है जब आकलन विद्यालय-आधारित हो, न कि बोर्ड परीक्षा या किसी अन्य तरीके से बाह्य रूप से संचालित कोई गतिविधि हो। इन तीनों को सी.सी.ई. के आवश्यक और महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते हुए, प्रत्येक से संबंधित कुछ अत्यावश्यक विशेषताएँ नीचे बताई जा रही हैं—

सीखने के लिए आकलन

यह आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के बाद न होकर उसके दौरान होता है, क्योंकि इसका मुख्य बिंदु यह है कि सभी विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार साथ-साथ सुधार किया जा सके।

(क) आकलन, विद्यालय-आधारित सीखने-सिखाने का अभिन्न भाग होता है—लंबे समय से यह धारणा बनी हुई है कि आकलन वर्ष के अंत में या किसी प्रक्रिया के अंत में की जाने वाली गतिविधि है। यह भी माना जाता रहा है कि यदि विद्यार्थियों पर बार-बार परीक्षा देने का दबाव बनाया जाए और उनके परिणाम की तुलना अधिक अंक प्राप्त करने वालों से की जाए तो उन्हें आगे और अच्छा करने की प्रेरणा मिलेगी। दूसरी ओर सी.सी.ई. सीखने-सिखाने से जुड़ी विद्यालय-आधारित गतिविधि के रूप में, परीक्षा संबंधी भय, चिंता या मानसिक आघात को दूर करता है।

(ख) बहुसाक्ष्य-आधारित—चूँकि आकलन की कोई भी एक क्रियाविधि बच्चे की प्रगति और सीखने के बारे में पूरी जानकारी देने में सक्षम नहीं है, अतः इसे पूर्वाग्रहों और किसी भी प्रकार की चूक से मुक्त करने के लिए बहुसाक्ष्य-आधारित होना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता है कि साक्ष्य के रूप में जानकारी इकट्ठा करने के लिए विभिन्न स्रोतों से संपर्क किया जाए।

(ग) सीखने की प्रगति का समग्र रूप से आकलन करना—इसमें विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं अर्थात् ज्ञान, प्रदर्शन, कौशलों, रुचियों, प्रकृतियों और प्रेरणा का आकलन शामिल है। आकलन समग्रतावादी दृष्टि से किया जा सके, इसके लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को कक्षा में और कक्षा के बाहर तरह-तरह की गतिविधियों में संलग्न कर उपर्युक्त आयामों का आकलन किया जाए।

(घ) सीखने की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना—इसके लिए सभी बच्चों (विशेष आवश्यकताओं वाले और वंचित वर्ग से आने वाले बच्चों को शामिल करते हुए) की

व्यक्तिगत और विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने की आवश्यकता है। शिक्षक बच्चों के सीखने की आवश्यकताओं, जैसे—सीखने की गति, शैली, स्तर तथा अन्य विशेष आवश्यकताओं अथवा उपर्युक्त समायोजनों आदि को ध्यान में रखते हुए, उपयुक्त स्रोतों से जानकारी एकत्र कर विभिन्न गतिविधियों की योजना बना सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं। अध्यापक को विद्यार्थियों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना बहुत जरूरी है।

(ड) समय के साथ हो रही सीखने की प्रगति में होने वाले परिवर्तनों को जानने व समझने में सहायक है—सीखने के लिए आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के साथ-साथ सतत रूप से चलता है। हालाँकि इसके तरीके और शैलियाँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। व्यक्तिगत या समूह कार्यों में शिक्षक स्वयं या साथी द्वारा किए गए आकलनों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग कर इकट्ठे किए गए साक्ष्यों पर आधारित सीखने की प्रक्रियाओं पर विद्यार्थियों की प्रगति का समग्र विवरण इकट्ठा करते हैं। बच्चों के सीखने की प्रगति में हो रहे परिवर्तनों के प्रेक्षण लगातार लिए जाते हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार बच्चों के प्रोफ़ाइल बनाने के लिए रिकॉर्ड किया जाता है।

(च) शिक्षकों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की समीक्षा करने और उसे सुधारने में मदद करता है—यह शिक्षकों को यह पता लगाने में कि बच्चे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं एवं सीखने में रह गई कमियों के कारणों की खोजबीन करने में मदद करता है। विद्यार्थियों, उनके सीखने के स्तर और कमियों के कारणों को समझने के बाद, शिक्षक बच्चों की प्रगति और उनके सीखने में सुधार हेतु मदद कर सकते हैं। इस प्रकार की मदद शिक्षक तभी कर पाएँगे जब वे अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं की समीक्षा कर उनमें सुधार करेंगे।

(छ) सीखने में रह गई कमियों/अंतरों पर चर्चा करने में मदद करता है—कमियों की पहचान करने और उनके संभावित कारणों का निर्धारण करने के बाद, शिक्षक को चाहिए कि वह पहले से मौजूद और नए ज्ञान के बीच तर्कसंगत संबंध बनाए। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों को फ्रीडबैक दें। फ्रीडबैक ऐसा हो जो विद्यार्थी-विशेष की जरूरतों को पूरा करता हो, समय पर मिले और स्पष्ट हो, जिससे कि विद्यार्थियों को सीखने में सुधार के लिए मदद मिलती रहे।

सीखने के रूप में आकलन

सी.सी.ई. केवल शिक्षकों का ही उत्तरदायित्व नहीं है। चूँकि अन्य पणधारक भी सीखने की प्रक्रिया में शामिल हैं अतः यह अकेले अध्यापक की जिम्मेदारी नहीं है। इस प्रकार यह विशेष रूप से माता-पिता, बच्चों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, मुख्य-अध्यापकों और अन्य सबका सामूहिक दायित्व है।

(क) सहयोगी और सहभागी पद्धति—यह पद्धति सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की योजना बनाने, संप्रेषण और आकलन में विद्यार्थियों को पणधारक के रूप में शामिल करती है और इस प्रकार विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों को फ्रीडबैक देने और प्राप्त करने में शामिल करती है। यह शिक्षक-समर्थित,

साथी और समूह अधिगम के माध्यम से स्वस्थ शिक्षक-शिक्षार्थी और बच्चों के आपसी संबंधों को विकसित करती है। यह अधिगम को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच संवाद और फ़ीडबैक के अवसर उपलब्ध करवाकर, शिक्षण-अधिगम और आकलन की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। बच्चों को योजना बनाने, विभिन्न कार्य करवाने और उनका मूल्यांकन करने के अधिक-से-अधिक अवसर देने से उनमें स्वयं के और साथियों के आकलन के कौशलों का विकास करने में सहायता मिलती है। यह काफी हद तक शिक्षकों के बोझ को कम करता है। बच्चे अपने काम, अपने साथियों के काम के आकलन का उत्तरदायित्व लेकर उनका सहयोग करते हैं और एक-दूसरे की सीखने में मदद करके सहयोगी अधिगम को प्रोत्साहन देते हैं। इस प्रक्रिया में माता-पिता या संरक्षकों से मदद ली जा सकती है, क्योंकि वे भी अपने बच्चों की प्रगति के लिए अर्थपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

(ख) ज्ञान के संसाधन पहचान करने में बच्चों की मदद करता है—सीखने के रूप में आकलन नए विचार ग्रहण करने, उन्हें विस्तृत संदर्भों में रखने, अपने स्वयं के और अपने साथियों के कार्य को सुपरिभाषित मानदंडों या अधिगम लक्ष्यों के लिए मूल्यांकन करने हेतु विद्यार्थियों की क्षमता का निर्माण करता है। यह विद्यार्थियों के सीखने के कौशलों के निर्माण में भी मदद करता है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान भी चल रहा होता है। सीखने में अपने मजबूत पक्ष और कमियों की पहचान करने के बाद, कमियों पर चर्चा करने या अपने अधिगम को आगे बढ़ाने और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त संसाधनों को खोजने के लिए बच्चे स्वयं योजना बना सकते हैं और प्रयास कर सकते हैं। सीखने के लिए आकलन की प्रक्रिया के समय नियमित रूप से दिए जाने वाले स्व-आकलन और साथी-आकलन के अवसर और विमर्श बच्चों को चिंतन करने, पुराने और नए अधिगम के बीच संबंध बनाने, अपने काम की समीक्षा करने और नए ज्ञान के लिए संसाधनों का पता लगाने में सहयोग देते हैं और इस प्रकार वे सीखने और प्रगति करने के लिए स्वयं कमियों को दूर करने की कार्यवाही करते हैं।

(ग) बच्चों में 'सीखने के लिए' सीखने के कौशलों का निर्माण करना—आकलन के तीन उद्देश्यों में से 'सीखने के रूप में आकलन', बच्चों में 'सीखने के लिए आकलन' और 'जीवनपर्यंत सीखने के कौशलों' को ग्रहण करने में मदद करता है और इस कारण सी.सी.ई. के अंतर्गत यह आकलन का सबसे निर्णायक घटक है। 'सीखने के लिए सीखना' के लिए उपयुक्त कार्यनीतियाँ विकसित करने और स्वयं की प्रगति के लिए संसाधन ढूँढ़ने में सहायता करके यह विद्यार्थियों को अपने अधिगम को समझने में मदद करता है, बच्चे के आत्मविश्वास को विकसित करता है और जीवनपर्यंत सीखने के लिए क्षमताओं को विकसित करने में मदद करता है, जो कि शिक्षा के मुख्य लक्ष्यों में से एक है।

अतः यह स्वाभाविक है कि 'सीखने के लिए आकलन' और 'सीखने के रूप में आकलन' प्रत्येक बच्चे के सीखने को आगे बढ़ाने तथा बेहतर करने के लिए मुख्यतः शिक्षकों, विद्यार्थियों और कुछ सीमा तक अन्य पणधारकों की भी मदद करते हैं।

सीखने का आकलन

- (क) **मानदंड-आधारित व्यापक आकलन**—राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा प्रत्येक पाठ्यचर्या संबंधी विषय के लिए उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य भी निर्धारित किए गए हैं। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विषय के लिए अधिगम-प्रतिफल (learning outcomes) भी बनाए गए हैं। सीखने का आकलन विद्यार्थियों के अधिगम के इन प्रतिफलों के आधार पर बनाए गए मानदंडों के अनुसार किया जाता है। इसके द्वारा पाठ्यचर्या के सभी पहलुओं में विद्यार्थी का सीखना किस सीमा तक हो पा रहा है, इसकी समग्र जानकारी मिलती है। यहाँ पर सभी पहलुओं से तात्पर्य है—भिन्न-भिन्न विषय-क्षेत्रों में प्रदर्शन, कौशल (अकादमिक एवं अंतर्वैयक्तिक), रुचियाँ, अभिरुचियाँ, प्रेरणा आदि। उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें शैक्षिक, गैर-शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक क्षेत्रों की अलग से जाँच न करके सभी का समग्रता में आकलन किया जाता है। मानदंड (सीखने के प्रतिफल) बच्चों के बहुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए, पाठ्यक्रमों पर आधारित हैं।
- (ख) **बहुसाक्ष्य-आधारित आकलन**—इसे विश्वसनीय बनाने के लिए, तरह-तरह के साक्ष्यों पर आधारित होने की आवश्यकता है। आकलन के विविध तरीकों, जैसे—कागज़-पेंसिल परीक्षा, मौखिक परीक्षा, कार्यों का प्रदर्शन, प्रयोग, परियोजना कार्य आदि का उपयोग कर साक्ष्यों को इकट्ठा किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और उद्देश्यों के संदर्भ में विद्यार्थी का सीखना किस सीमा तक हो पाया, इस परिणाम पर पहुँचने या निर्णय लेने के लिए चिह्नित मानदंडों को आधार बनाया जाना चाहिए तथा प्रत्येक बच्चे के अधिगम और विकास में हो रहे परिवर्तन को जानने के लिए साक्ष्यों को व्यवस्थित रूप से रखा जाना चाहिए।
- (ग) **बच्चों की बिना लेबल या तुलना के रिपोर्ट करना**—मूल्यांकन का अर्थ अक्सर बच्चों को लेबल करने या उनके काम की एक-दूसरे से तुलना करने से लगाया जाता है। यह कार्य अंकों, ग्रेड या किन्हीं अन्य साधनों द्वारा उनकी कमजोरियों को दर्शाता है। यह उन्हें अपमानित होने का एहसास कराता है और उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता है। बच्चों को बिना अपमानित किए आवश्यक मदद देना और बच्चों के काम की तुलना उसके साथियों के काम से न करके उनके स्वयं के पहले के काम से करना, बच्चे के सीखने और विकास की आवश्यकताओं की पहचान के लिए उपयोग में लिया जा सकता है। यह न केवल उनके अधिगम में वृद्धि करता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है।
- (घ) **पणधारकों के साथ सीखने की प्रगति को साझा करना**—बच्चों के सीखने के परिणाम और उसकी स्थिति को विभिन्न पणधारकों, विद्यार्थियों, माता-पिता, अन्य शिक्षकों, प्रशासकों, विद्यालय प्रबंधन समिति और नीति-निर्माताओं से सरल भाषा में सरल प्रपत्रों का उपयोग करते हुए साझा या संप्रेषित किया जा सकता है।

2.3 सी.सी.ई. क्या संकेत देता है

सी.सी.ई., शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न भाग है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से पूरी तरह अलग किसी भी परंपरागत गतिविधि के विरुद्ध है। सी.सी.ई. किसी पाठ या इकाई के समाप्त होने पर अलग से नहीं किया जाना चाहिए, न ही इसे त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक परीक्षा के रूप में किया जाना चाहिए। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ एकीकृत होकर चलने के लिए बच्चों के सीखने और विकास संबंधी समग्र जानकारी लेने की आवश्यकता होती है। यह जानकारी बच्चों की सीखने की उन परिस्थितियों के दौरान प्राप्त की जानी चाहिए, जो उनके सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करती और बढ़ाती हों। सी.सी.ई. को भारत में कई दशकों से काम में लाया जा रहा है और इसमें तीन शब्द शामिल हैं—‘सतत’, ‘व्यापक’ और ‘मूल्यांकन’। आइए, देखते हैं कि प्रत्येक शब्द का क्या अर्थ है।

सी.सी.ई. के ‘सतत’ पहलू का अर्थ विभिन्न साधनों/उपकरणों (टूल्स) का उपयोग कर शिक्षण-अधिगम के समय बच्चों को लगातार देखना और उनकी मदद करना है। ध्यान रहे कि किसी भी रूप में इसका अर्थ बार-बार औपचारिक टेस्ट लेना नहीं है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के समय सतत आकलन बच्चों के सीखने में रह गई कमियों की पहचान करने के बारे में संकेत देता है, जिससे अधिगम को बेहतर बनाने के लिए शिक्षक समय पर कार्यवाई कर सकते हैं। शिक्षण-अधिगम के समय किए गए आकलन द्वारा बच्चों के सीखने संबंधी इकट्टी की गई जानकारी, विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में विद्यार्थियों की क्षमताओं और सीखने में रह गई कमियों की पहचान करने में शिक्षकों की मदद करती है। यह पाठ्यचर्या और शिक्षण-अधिगम पद्धतियाँ सभी बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षकों को मार्गदर्शन देने का काम करती हैं।

सी.सी.ई. के ‘व्यापक’ पहलू का अर्थ है बच्चे की प्रगति का समग्रता में बोध होना अर्थात् बच्चे के विकास को समग्र रूप से देखना, जैसे—संज्ञानात्मक, शारीरिक और मनो-सामाजिक पहलुओं में प्रगति का ब्यौरा देखना। अक्सर यह गलत अर्थ लगा लिया जाता है कि बच्चों के व्यक्तिगत सामाजिक गुणों, जैसे—संवेदना, सहयोग, दूसरों के लिए सरोकार आदि का आकलन केवल पाठ्येतर माने जाने वाले क्षेत्रों, जैसे—कला, संगीत, नृत्य, शारीरिक शिक्षा आदि द्वारा ही हो सकता है और इन्हें विभिन्न पैमानों पर ग्रेड दिए जा सकते हैं। परंतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 इन सभी को शैक्षिक क्षेत्र ही मानती है और इनमें तथा अन्य विषयों, जैसे—गणित, विज्ञान और भाषा आदि, में भेदभाव नहीं करती।

व्यक्तिगत-सामाजिक गुण और उनके आकलन न तो किसी विशेष विषय तक सीमित हैं और न ही उनके लिए विशेष समय निर्धारित करने की आवश्यकता है। ये पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों के अभिन्न अंग हैं और इस कारण शिक्षण-अधिगम के समय विभिन्न परिस्थितियों में इन्हीं क्षेत्रों के माध्यम से इनका आकलन करने की आवश्यकता है, जब बच्चे विभिन्न व्यक्तिगत या समूह में सीखने के कार्यों में व्यस्त होते हैं, जो कक्षा के भीतर या बाहर हों या विद्यालय के अंदर या बाहर हों।

‘मूल्यांकन’ बच्चों के सीखने और विकासात्मक पहलुओं का मानदंड आधारित मानचित्रण है। अक्सर ‘आकलन’ और ‘मूल्यांकन’ को एक-दूसरे के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, परंतु इनके अर्थ में अंतर है। आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चों के सीखने में रह गई कमियों को पहचानने की प्रक्रिया है। सीखने-सिखाने के दौरान ही आकलन के लिए विभिन्न कार्यनीतियों का उपयोग करते हुए साक्ष्य इकट्ठे किए जाते हैं और उनका विश्लेषण किया जाता है। इसके अंतर्गत बच्चों को आवश्यकतानुसार समय पर सहायता देने के लिए शिक्षकों द्वारा अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की समीक्षा और सुधार भी शामिल हैं। यह बच्चों को बगैर कोई स्तर या बेंचमार्क दिए हुए, कमियों को समझने और उपयुक्त हस्तक्षेप करने के लिए ‘कैसे’ और ‘क्यों’ पहलुओं के साथ अधिगम में परिवर्तन पर फोकस करता है। मूल्यांकन, बेंचमार्क देने के लिए स्थापित मानदंडों की कसौटी पर शिक्षार्थियों के सीखने की प्रगति को परखता है। अर्थात् सभी बच्चों में सीखने तथा विकास की दिशा में किस सीमा तक परिवर्तन हुए हैं यह जानने के लिए इसे अनेक विश्वसनीय और मान्य साक्ष्यों पर आधारित होना होगा, ताकि प्रामाणिक व्याख्याओं तक पहुँचा जा सके। जैसा कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम की धारा 29(2) के अंतर्गत पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रक्रियाओं के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में विचार किया गया है— पाठ्यचर्यागत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, सी.सी.ई. को आकलन के तीनों पहलुओं को आवश्यक रूप से पूरा करने की आवश्यकता है। ‘सीखने के आकलन’ पर अधिक बल देना विशेष रूप से जब यह बच्चों को लेबल करने और इसे अभिभावकों को रिपोर्ट करने के लिए उपयोग में लाया जाता हो, मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए बोझ और उबाऊ बना देता है। ऐसा इसलिए है कि इसमें बल पूरी तरह से आँकड़े इकट्ठा करने, अंकों/ ग्रेड की गणना करने और संचयी उपलब्धियों पर होता है। परंतु दूसरी ओर ‘सीखने के लिए आकलन’ और ‘सीखने के रूप में आकलन’ दोनों शिक्षण-अधिगम के समय होते हैं, परंतु अक्सर इन्हें आपस में जोड़कर नहीं देखा जाता और इस तरह इन्हें पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है।

3

सी.सी.ई.—किन पहलुओं का हो आकलन?

यह जानने के लिए कि किन पहलुओं का आकलन किया जाना है, पहले यह समझने की आवश्यकता है कि शिक्षा के लक्ष्य क्या हैं? अथवा विद्यालयी शिक्षा द्वारा बच्चों को क्या सीखना चाहिए? यह ध्यान में रखते हुए कि कक्षा में होने वाले शिक्षण-अधिगम के केंद्रबिंदु बच्चे होते हैं, निम्नलिखित प्रश्नों पर किया गया विचार-विमर्श, आकलन की प्रक्रिया के लिए रास्ता सुझा सकता है या मार्गदर्शन दे सकता है—

- विद्यालयी शिक्षा द्वारा बच्चों में क्या-क्या विकसित करना चाहिए? अथवा
- विद्यालयी शिक्षा के किसी विशेष स्तर के अंत तक आते-आते बच्चों में किस प्रकार की सीखने और विकास संबंधी विशेषताएँ देखी जानी चाहिए?

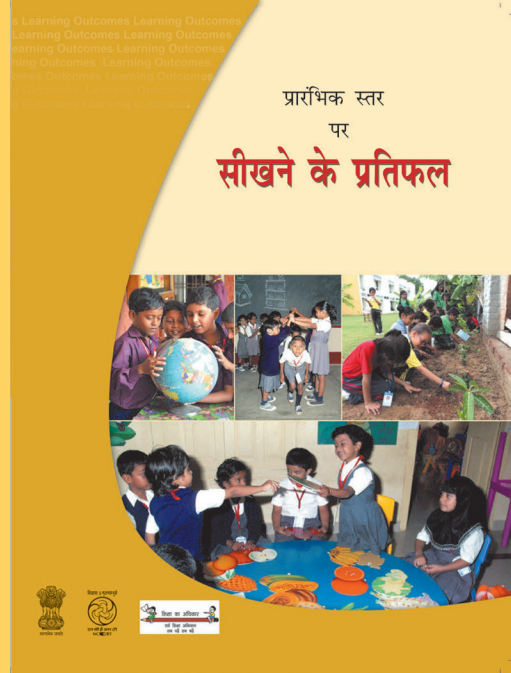
“शिक्षा आपके बच्चों को शिक्षित करने के लिए है ताकि वे जीवन को पूर्ण रूप से समझ सकें, न कि मात्र जीवन के एक हिस्से को, जैसे—शारीरिक, भावात्मक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक अथवा आध्यात्मिक; जीवन पर विभाजित दृष्टिकोण न हो, बल्कि एक संपूर्ण एकीकृत दृष्टिकोण हो... शिक्षा के माध्यम से एक ऐसा मानव सामने आए, जो रचनाकार हो, सक्षम हो, जिसमें ऐसी बुद्धि हो जो बोझ के रूप में न हो और किसी एक विशेष दिशा में ढली न होकर परिपूर्ण हो, जो किसी विशेष समाज, जाति या धर्म से संबंधित न हो, ताकि उस शिक्षा के माध्यम से और उस बुद्धि के साथ वह अपने जीवन को एक तकनीशियन का रूप देने के बजाए एक मानव का रूप देने में सक्षम हो सके।”

—जे. कृष्णमूर्ति

यह जानना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा बच्चों को केवल काम करने वालों की दुनिया के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि इसका कार्यक्षेत्र विशाल होता है क्योंकि यह उन्हें विवेकशील, संवेदनशील, योगदानकर्ता, साहसी, स्वाधीन, जीवनपर्यंत शिक्षार्थी बनाने के लक्ष्य को लेकर चलती है। उनमें देखभाल, साझा करने, सत्यनिष्ठा, आत्मसम्मान आदि के मूल्य होने के अलावा आलोचनात्मक चिंतन, संप्रेषण, रचनात्मकता, गणितीय योग्यताएँ होनी चाहिए। इसलिए ये सभी लक्ष्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में दिए गए विभिन्न अधिगम क्षेत्रों की पाठ्यचर्यागत अपेक्षाओं के साथ समाहित किए जाने चाहिए। सीखने के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाया जाने वाला शिक्षणशास्त्र इस प्रकार का होना चाहिए, जो सीखने की ऐसी प्रक्रियाओं पर बल देता हो, जो प्रत्येक पाठ्यचर्यागत क्षेत्र के लिए विशिष्ट हो। ऐसे नियत-कार्यों (tasks) की रचना किया जाना बहुत महत्वपूर्ण है जो उन अधिगम-प्रक्रियाओं पर केंद्रित हों जिनके द्वारा बच्चे इन ज्ञान कौशलों और मनोवृत्तियों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। इससे वे वैश्विक नागरिक के रूप में अपना योगदान दे सकेंगे। अतः एक संतोषप्रद गुणवत्ता वाली शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और यह व्यवस्था का उत्तरदायित्व होना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास के लिए सभी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, संशोधित नीति 1992 तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन (Programme of Action) 1992 में इस बात पर बल दिया गया कि 'बच्चों का न्यूनतम अधिगम स्तर' निर्धारित किया जाना चाहिए और बच्चों के अधिगम का नियमित अंतराल पर आकलन होना चाहिए ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य, सभी बच्चों को कम से कम न्यूनतम अधिगम स्तर तक का ज्ञान होना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति और उनकी प्रगति पर लगातार नज़र रहे। प्राथमिक अवस्था के लिए कक्षा एवं विषयवार रूप से, 1992 में कुशलताओं के तौर पर तैयार किए गए न्यूनतम अधिगम स्तर अत्यधिक उत्पाद उन्मुखी (Product Oriented) थे और इनमें बच्चों के संपूर्ण विकास के आकलन की संभावना सीमित थी। लगभग एक दशक पहले सृजनात्मक विचारधारा आ जाने से इसमें एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया जब बच्चों में ज्ञान निर्माण करने की क्षमता को मौलिक रूप से सीखने के रूप में कक्षागत प्रक्रिया के केंद्रबिंदु के रूप में पहचाना गया। इसमें शिक्षक की प्राथमिक भूमिका सीखने की प्रक्रिया में सुगमकर्ता के रूप में होती है। बच्चे द्वारा जो ज्ञान अर्जित किया जाता है, वह दुनिया के साथ उनके जुड़ाव की प्रक्रिया का परिणाम है, जब वे खोज करते हैं, प्रत्युत्तर देते हैं, आविष्कार करते हैं और अर्थ की खोज करते हैं। तात्पर्य यह है कि सीखने की प्रक्रिया में बदलाव आया है। इसमें वैचारिक समझ को सतत प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया गया, यानी अवधारणाओं की समझ के कई पहलुओं की प्राप्ति के लिए सह-संबंधों के संवर्धन और गहनता की प्रक्रिया, संज्ञानात्मक विकास के एकीकृत घटक के रूप में संवेदनाएँ, अर्थ समझना और अमूर्त चिंतन और मनन की क्षमता का विकास। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार—2009 में शिक्षा के माध्यम से बच्चे के संपूर्ण विकास को बुनियादी अधिकार के रूप में स्वीकार किया गया। इस दिशा में बच्चों की प्रगति के मानचित्रण हेतु प्राथमिक शिक्षा स्तर पर विभिन्न पाठ्यचर्यागत क्षेत्रों के लिए 'सीखने के प्रतिफल' तैयार किए गए हैं। प्रत्येक कक्षा के 'सीखने के प्रतिफल', शिक्षकों को केवल शिक्षा के वांछित तरीके अपनाने में ही सहायक नहीं है, बल्कि अन्य पणधारकों, जैसे—संरक्षक, माता-पिता, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों, समुदाय तथा राज्य स्तर के शिक्षा अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका के प्रति सतर्क और ज़िम्मेदार भी बनाते हैं। स्पष्ट रूप से परिभाषित 'सीखने के प्रतिफल' विभिन्न पणधारकों की ज़िम्मेदारी तथा उत्तरदायित्वों को सुनिश्चित करते हुए और दिशानिर्देश दे सकते हैं ताकि विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र से अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके।

प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली (2017)



समावेशी अवसर उपलब्ध हों। यह उन लक्ष्यों को तय करने की माँग करता है जो ज्ञान, कौशलों और प्रवृत्तियों को समग्र रूप से समावेशित कर सकें। ये लक्ष्य बच्चे के व्यक्तित्व और विकास के विभिन्न पहलुओं के आकलन के लिए स्पष्ट और मापन योग्य हों। शिक्षा की गुणवत्ता के मुद्दों को संबोधित करने के लिए, शिक्षकों सहित विभिन्न पणधारकों को यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि सीखना किस प्रकार का होना चाहिए, किन मानदंडों के आधार पर इनका आकलन किया जाना चाहिए और अपने प्रयासों को सही दिशा में कैसे रखा जाए। विवेकपूर्ण विकल्पों का चयन करने के लिए, उन्हें बच्चों के सीखने और प्रदर्शन के संदर्भ में कक्षा, विद्यालय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर शैक्षिक संस्थानों की कार्य प्रणालियों के बारे में ठीक से जानकारी होनी चाहिए। तर्कसंगत निर्णय लेने में उनकी सहायता करने के लिए निगरानी (monitoring) के उचित उपायों और आकलन की विधियों को उचित स्थान पर उपलब्ध होना चाहिए और शिक्षा व्यवस्था के साथ एकीकृत होना चाहिए। इन उपायों में शिक्षार्थियों के समग्र विकास को दर्शाने वाले मानदंड सम्मिलित हैं। इससे वे बच्चों के सीखने की प्रगति पर दृष्टि रख सकेंगे और सीखने में रह गई कमियों को समय पर दूर कर सकेंगे। इसे ध्यान में रखते हुए, रा.शै.अ.प्र.प. ने *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* नाम से एक दस्तावेज विकसित किया है जो प्रत्येक विषय के लिए स्तरवार पाठ्यचर्यागत अपेक्षाओं और कक्षावार सीखने के प्रतिफलों का उल्लेख करता है और इन सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रियाएँ भी सुझाता है।

गुणवत्ता के मुद्दों को संबोधित करने के लिए वृहत् (जैसे—राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण, राज्य अधिगम उपलब्धि सर्वेक्षण आदि) और सूक्ष्म-स्तरीय (विद्यालय-आधारित) दोनों प्रकार के मूल्यांकन महत्वपूर्ण होते हैं। दोनों के अपने-अपने लाभ हैं। परंतु सी.सी.ई. एक विद्यालय-आधारित मूल्यांकन पद्धति है। अतः यह वृहत्-मूल्यांकनों में शिक्षा के स्तर को सुधारने में भी सहायता कर सकती है। ऐसा इसलिए कि यह स्पष्ट रूप से परिभाषित विषयवार और कक्षावार सीखने के प्रतिफलों के लिए सीखने की प्रगति का मानचित्रण संभव बनाती है और ज़मीनी स्तर पर सुधार के उपाय करती है। यह पद्धति राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अंतर्गत सुझाई गई पाठ्यचर्यागत अपेक्षाओं को सुनिश्चित करने में विद्यालयों की मदद करेगी।

4

कब, कहाँ और कैसे करें सी.सी.ई.

पिछले अध्याय में सी.सी.ई. के अभिप्राय, प्रासंगिकता, उद्देश्य और मानदंड को स्पष्ट किया गया। इस अध्याय में शिक्षकों को स्पष्ट दिशानिर्देश दिए गए हैं ताकि सिद्धांत और व्यवहार के बीच की दूरी को पाटा जा सके और वे अपनी कक्षाओं में सी.सी.ई. को प्रभावी रूप से उपयोग में ला सकें। इस अध्याय में निम्नलिखित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है—

- सी.सी.ई. विभिन्न पणधारकों (stakeholders) की कैसे मदद करता है?
- सी.सी.ई. के माध्यम से आकलन कैसे किया जा सकता है?
- सी.सी.ई. कब किया जा सकता है?
- विभिन्न विषय-क्षेत्रों और व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के संदर्भ में बच्चे की समग्र प्रगति को प्रतिबिंबित करने वाला बच्चे का प्रोफ़ाइल (विवरणिका) कैसा होगा?
- सी.सी.ई. के अंतर्गत आकलन द्वारा प्राप्त जानकारी को प्रभावी रूप से किस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है?
- यह प्रोफ़ाइल सभी बच्चों के साथ-साथ विभिन्न पणधारकों की मदद किस प्रकार कर सकता है?

4.1 सी.सी.ई. की प्रक्रिया

आकलन और शिक्षण-अधिगम एक-दूसरे के पूरक हैं और इन्हें न तो अलग किया जा सकता है और न ही अलग करके देखा जा सकता है। अतः यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि आकलन की प्रक्रिया इस बात को समझने पर केंद्रित हो कि बच्चे कैसे सीखते हैं। यह प्रक्रिया सी.सी.ई. को मूल्यांकन की एक ऐसी योजना के रूप में नहीं देखती जिसमें सिर्फ यह बताया जाए कि पाठ्यक्रम कितना होना चाहिए या फिर यह बताया जाए कि टेस्ट कितनी बार होने हैं, कितने उपकरण होने चाहिए और अलग-अलग समय पर लिए गए टेस्ट को कितना महत्त्व दिया जाए। यह बच्चों को लेबल करने, उनका मूल्यांकन करने, अंक या ग्रेड देने मात्र से नहीं जुड़ी है। सीखना (अधिगम) एक सतत प्रक्रिया है जिसका आगे की कक्षाओं से भी जुड़ाव होता है यानी कि पिछली कक्षाओं में सीखी गई अवधारणाएँ आगे की कक्षाओं में सीखने का आधार बनती हैं और एक विषय की समझ दूसरे विषय की समझ बनाने में मदद करती है। इसलिए शिक्षक और शिक्षार्थी, दोनों को समय-समय पर चिंतन और इसके आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में और सुधार करते रहने की ज़रूरत होती है। पृष्ठ 20–21 पर दिया गया चित्र यह दर्शाता है कि किस तरह से सी.सी.ई. शिक्षण-अधिगम के साथ जुड़ा हुआ है।

सी.सी.ई. के लिए विविध प्रकार के स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करने और आकलन के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जिससे यह जाना और समझा जा सके कि क्या सभी बच्चे विविध

प्रकार के अनुभवों, गतिविधियों और सीखने के कार्यों से गुजरते हुए वास्तव में सीख रहे हैं। यह समझते हुए कि सभी बच्चे अपने आप में अद्वितीय हैं, अपने तरीके से ही सीखते हैं और यह कि सीखने की प्रक्रिया विद्यालयों और पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रहती, यह आवश्यक हो जाता है कि कक्षाओं में बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम और आकलन की कार्यनीतियाँ अपनाई जाएँ। जैसा कि पहले भी अध्याय 2 में चर्चा की जा चुकी है, सी.सी.ई. के तीन विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए सी.सी.ई. के अंतर्गत शिक्षण-अधिगम और आकलन के समय कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

आमतौर पर बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम और आकलन, विद्यालय और कक्षा के परिवेश पर निर्भर करता है, जो बाल-हितैषी हो और जहाँ बच्चों में भय, चिंता या सदमे को बढ़ावा देने की बिलकुल भी संभावना न हो।

4.2 बाल-हितैषी परिवेश सुनिश्चित करना

सुरक्षित बाल-हितैषी परिवेश, जो बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सीखने-सिखाने की बाल-केंद्रित पद्धतियों को प्रोत्साहित करता हो। ऐसा परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद कर सकता है। इस संदर्भ में नीचे दी गई बातें ध्यान देने योग्य हैं—

- सभी बच्चे सीखने में सक्षम होते हैं। यह वयस्कों, विशेष रूप से शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे सुनिश्चित करें कि बच्चे प्रत्येक स्तर और कक्षा के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने की अपनी क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग करें।
- शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे प्रत्येक बच्चे के साथ स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित करें, जिससे उनकी विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित हो सके। बच्चों, माता-पिता, संरक्षकों के साथ नियमित संवाद करने से और अन्य शिक्षकों से उनकी रुचियों, पसंद-नापसंद और व्यवहार के बारे में जानकारी इकट्ठा करने से इस प्रक्रिया में सहायता मिल सकती है।
- इस प्रकार का भयमुक्त परिवेश बनाना आवश्यक है, जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें, अपने शिक्षक पर भरोसा कर सकें और अपनी पसंद, नापसंद या समस्याओं को निःसंकोच रूप से शिक्षक के साथ साझा कर सकें। यदि कोई मुद्दा हो तो शिक्षक को जल्दबाजी में किसी निर्णय पर नहीं पहुँचना चाहिए, बल्कि माता-पिता, अभिभावकों और अन्य शिक्षकों के साथ उस पर बातचीत करनी चाहिए।

“शिक्षा का अधिकार अधिनियम, धारा 17 (1) शारीरिक दंड और मानसिक उत्पीड़न का निषेध करता है और धारा 17(2) के अंतर्गत इसे दंडनीय अपराध बताया गया है। अधिनियम की धाराएँ 8 और 9 कमजोर और वंचित वर्ग के बच्चों के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव का निषेध करती हैं, जो भेदभाव उन्हें किसी भी आधार पर प्रारंभिक शिक्षा पाने और पूरा करने से रोक सकता है।” साथ ही, शिक्षा का अधिकार अधिनियम ऐसे किसी दूसरे कानून को लागू होने से रोकता है जिससे बच्चे के अधिकारों का उल्लंघन होता हो। उदाहरण के लिए, भारतीय दंड संहिता और एस.सी./एस.टी. अत्याचार निरोधक अधिनियम- 1989 के अंतर्गत अपराधी ठहराना।

चर्चा करना
चित्र बनाना
प्रयोग करना

कार्य-पत्रक
रोज़नामचा
साथियों द्वारा आकलन
पोर्टफोलियो



अधिगम और आकलन की कार्यनीतियों
की योजना बनाना

शिक्षण-अभि
और आकल
योजना बन



शिक्षण अधिगम और आकलन प्रारंभ करना



माता-पिता/अभिभावकों और
बच्चों के साथ
मिलकर कार्य करना

शिक्षण-अधिगम में
बदलाव करना

हर बच्चा
सकता

अधिगम और विकास
की प्रगति को
साझा करना



माता-पिता/अभिभावकों के साथ
बच्चों की प्रगति के बारे में बातचीत करना



बच्चों के प्रदर्शन
के बारे में चिंतन करना



प्रगति रिपोर्ट (प्रोग्रेस रिपोर्ट) बनाना

अधिगम और आकलन का चक्र



संसाधनों को एकत्र करना

अधिगम
न की
गाना



अधिगम के स्थान की व्यवस्था करना

परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्य



कार्यस्थलों का भ्रमण करना
(फ़ील्ड विज़िट)

समूह/जोड़ों में कार्य करना



व्यक्तिगत प्रस्तुति करना



सीख
है

शिक्षण-अधिगम में
बदलाव करना

शिक्षण अधिगम
और आकलन की
व्यवस्था करना



पोर्टफ़ोलियो



दृष्टांत (एनेकडॉट) दर्ज
करना/रोजनामचा (लॉगबुक)



जोड़ों में कार्य करना/
साथियों द्वारा आकलन करना



अवलोकन करना/
समय पर प्रतिपुष्टि देना (फ़ीडबैक)



लिखित कार्य करना/
स्व-आकलन करना

- सकारात्मक अनुशासन बनाए रखने के लिए वैकल्पिक कार्यनीतियाँ कक्षाओं में लागू होनी चाहिए। माता-पिता/अभिभावकों को भी इसके लिए विश्वास में लेने की आवश्यकता है।

सकारात्मक अनुशासन में वे कार्यनीतियाँ शामिल हैं जो बच्चों को उत्तरदायी, सहयोगी और संवेदनशील बनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

- यदि किसी बच्चे को कोई शारीरिक या भावात्मक परेशानी है, तो आवश्यकता होने पर उसे माता-पिता या अभिभावकों की भागीदारी से परामर्शदाताओं या चिकित्सकों से मिलने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- बच्चों की विशिष्ट योग्यताओं और उनके सीखने की गति की पहचान करके, विभिन्न गतिविधियों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक को धैर्य रखने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चों को सीखने, प्रगति करने और समयबद्ध तरीके से कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहायता मिल सके।
- शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त स्थान, विविध सामग्री और सीखने की सहायक-सामग्री उपलब्ध कराएँ। इसमें उन बच्चों का भी ध्यान रखा जाए जिनकी कुछ विशिष्ट आवश्यकताएँ हैं।
- कभी-कभी किसी गतिविधि की योजना बनाने और उसे पूरा करने के लिए तय समय से अधिक समय की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे में, समय-सारणी में शिक्षकों के लिए लचीलेपन की सुविधा होनी चाहिए।
- शिक्षक को यह स्वतंत्रता हो कि वह कक्षा में की जाने वाले गतिविधि के अनुरूप बैठने की व्यवस्था को बदल सकें।

4.3 बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम और आकलन

अगर विद्यालय में बाल-हितैषी परिवेश है तो शिक्षण-अधिगम और आकलन की बाल-केंद्रित प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से आकार ले लेगी। अतः इनके साथ-साथ आकलन के तीन उद्देश्यों अर्थात् 'सीखने के लिए आकलन', 'सीखने का आकलन' और 'सीखने के रूप में आकलन' के अंतर्गत उल्लिखित पहलुओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। सी.सी.ई. को लागू करने के लिए निम्नलिखित बातें बहुत ही आवश्यक हैं—

4.3.1 शिक्षण-अधिगम और आकलन की योजना बनाना और आयोजन करना

- बच्चे ज्ञान के निर्माता होते हैं। इसका अर्थ है, प्रत्येक बच्चे को उसके पूर्व-अनुभवों और अधिगम के आधार पर नवीन जानकारी प्राप्त करने, उसे अपनी स्वयं की समझ बनाने और निष्कर्षों पर पहुँचने के मौके दें।

दिव्यांगजनों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCRPD) और दिव्यांग अधिकार अधिनियम 2016 के संदर्भ में दिव्यांग बच्चों के अधिकारों की दिशा में बढ़ते प्रोत्साहन और आर.टी.ई अधिनियम 2009 के अंतर्गत उनकी शिक्षा के लिए यह महत्वपूर्ण है कि समावेशी शिक्षा पद्धति अपनाई जाए, जिसमें सभी विद्यार्थियों का स्वागत किया जाता है; चाहे उनकी क्षमताएँ और पृष्ठभूमि कोई भी क्यों न हो। इसमें उनके सीखने और आकलन की विभिन्न आवश्यकताएँ सीखने के सार्थक और उत्तरदायी वातावरण में पूरी की जाती हैं। समावेशी कक्षाओं में प्रत्येक बच्चे की पहचान उसके सीखने की विशिष्ट शैली से होनी चाहिए। किसी वर्ग विशेष, जैसे—दिव्यांग, पिछड़ा आदि श्रेणियों के आधार पर उनका वर्गीकरण नहीं किया जाना चाहिए।

- बच्चों के पूर्व-ज्ञान और अनुभवों को महत्व देना चाहिए और उनका उपयोग नए अधिगम के विकास में करना चाहिए।
- बच्चों के शिक्षण-अधिगम और आकलन के समय यह महत्वपूर्ण है कि उनके बीच की भिन्नताओं को समझा जाए। इस तथ्य का सम्मान करना भी आवश्यक है कि सीखते समय वे भिन्न-भिन्न प्रकार से समझेंगे और प्रतिक्रिया करेंगे।
- पाठ्यपुस्तकों में दी गई अनेक गतिविधियाँ या अधिगम-अनुभव बहुत से विकल्प भी सुझा सकते हैं, जहाँ विभिन्न साधनों का उपयोग कर ऐसी गतिविधियाँ करवाई जाएँ जिनमें हाथ और मस्तिष्क (hands-on and minds-on), दोनों का इस्तेमाल हो। परंतु यदि आवश्यकता हो तो शिक्षक बच्चों की मदद के लिए विभिन्न संसाधनों की योजना, विकास और उपयोग इस प्रकार से करें जिससे वे पाठ्यक्रम में दी गई और विभिन्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों के विभिन्न विषयों और पाठों में दी गई संकल्पनाओं, कौशलों, सरोकारों और प्रवृत्तियों को समझ सकें।
- यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि बच्चे विभिन्न गतिविधियों और कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लें और सार्थक तरीके से व्यस्त रहें।
- बच्चों को अकेले और समूहों, दोनों तरह से काम करने के अवसर दिए जाने चाहिए, जहाँ वे आपस में चर्चा करें, विचारों को साझा करें, सहयोग करें और एक-दूसरे के दृष्टिकोणों का सम्मान करें।
- यह समझना ज़रूरी है कि पाठ्यपुस्तक, शिक्षण-अधिगम के संसाधनों में से मात्र एक संसाधन है। शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और सामाजिक संदर्भों के अनुसार अधिगम के तरीकों की योजना बनाएँ।
- शिक्षक, शिक्षण-अधिगम को विषय-वस्तुवार या पाठवार आयोजित कर सकते हैं, जैसा कि वर्ष के शुरू में त्रैमासिक/अर्धवार्षिक/वार्षिक योजना बनाते समय तय किया गया हो।

विद्यालयों और शिक्षकों को अपने स्तर पर योजना तय करने की छूट होनी चाहिए। इस संदर्भ में संबंधित राज्य/केंद्र शासित प्रदेश या संस्थान यह निर्णय ले सकते हैं।

- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया शुरू करने से पहले, शिक्षक को पाठ्यपुस्तकों में दी गई पठन सामग्री और संबंधित जानकारी को ध्यान से पढ़-समझ लेना चाहिए और उसके अनुसार सीखने के उद्देश्यों को तय करने के लिए सीखने के बिंदुओं की पहचान कर लेनी चाहिए। ये बिंदु संबंधित पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों में दिए गए सीखने के प्रतिफलों और संकल्पनाओं के अनुरूप होने चाहिए।

सीखने के प्रतिफल, सीखने की प्रगति को समझने के लिए शिक्षकों, माता-पिता, बच्चों और अन्य व्यक्तियों के लिए संदर्भ बिंदुओं के रूप में कार्य करते हैं। इस प्रकार सीखने के प्रतिफल, सी.सी.ई. के अंतर्गत बच्चों की सीखने की प्रगति का निरीक्षण (मॉनीटर) करने हेतु एक रूपरेखा उपलब्ध कराते हैं।

- इसके अनुसार शिक्षक, इकाई-योजना (unit plan) बना सकते हैं, जो विषय-वस्तु (थीम) या पाठ के अनुसार हो सकती है। इकाई-योजनाओं में न केवल सीखने के कार्यों और संसाधनों का उल्लेख हो अपितु आकलन कार्यनीतियों का उल्लेख भी होना चाहिए।
- उन संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है जो पाठ्यपुस्तकों में सुझाए गए हैं। यदि आवश्यकता हो तो शिक्षक उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं, अपनी आवश्यकता के अनुरूप उन्हें ढाल सकते हैं या नए संसाधन भी बना सकते हैं। इसका निर्णय संसाधनों की उपलब्धता, समय, लागत आदि को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। इसके अलावा इन संसाधनों का चयन बच्चों की योग्यताओं और पृष्ठभूमि, संकल्पनाओं, आवश्यकताओं के अनुरूप और तर्कसंगत होना चाहिए।
- शिक्षक एक पाठ या कुछ संकल्पनाओं के लिए शिक्षण-अधिगम की शुरुआत इकाई-योजना के अनुसार कर सकते हैं।
- किसी एक पाठ के लिए गतिविधियों की योजना बनाते समय, बच्चों के वर्तमान स्तर की पहचान करना ज़रूरी है, जैसे कि अपेक्षित लक्ष्यों और उनके वर्तमान ज्ञान, समझ और कौशलों के बीच के अंतर को पहचानना। इस जानकारी के लिए शिक्षकों और शिक्षार्थियों, दोनों को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।
- स्व-आकलन व साथी-आकलन के अंतर्गत प्रश्न, चर्चा, चित्रकारी, लेख, प्रदत्त कार्य आदि तरीकों का उपयोग मौखिक या लिखित रूप में व्यक्तिगत या समूह कार्यों द्वारा किया जा सकता है। ये तरीके बच्चों के सीखने में रह गई कमियों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं। शिक्षकों को उन कमियों की व्याख्या कर विद्यार्थियों को समुचित रूप से बताना चाहिए।

साथी या समूह अधिगम और स्व या साथी-आकलन के अवसरों को बहुस्तरीय (multigrade) परिस्थितियों में भी शिक्षक बहुत प्रभावशाली तरीके से उपयोग में ला सकते हैं।

- यह बच्चों को आकलन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भागीदार बनने में मदद करता है, भले ही आकलन हेतु जानकारी किसी भी तरीके से प्राप्त की गई हो। यह शिक्षकों को यह जानने में भी मदद करता है कि कक्षा में बच्चे 'क्या जानते हैं' और 'क्या नहीं जानते हैं'।
- बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षकों को सब बच्चों के संदर्भ और सीखने की आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने-सिखाने की विभिन्न गतिविधियों पर चिंतन करने तथा उन्हें नियोजित करने की आवश्यकता होती है। योजना की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी आवश्यक है, चाहे वह उन्हें आगे की विषय-वस्तु या गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी देने के लिए हो या विभिन्न गतिविधियों में उनके सुझाव लेने के लिए हो।
- यह सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को अपनेपन का एहसास देता है, सीखने के कार्यों में उनकी भागीदारी को बढ़ाता है। अंततः कक्षा में सभी बच्चों के सीखने को बढ़ावा देता है।
- नियोजित गतिविधियों का आयोजन करने के लिए शिक्षक एक अस्थायी रूपरेखा और समय सीमा विकसित कर सकते हैं और सोची गई गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए दैनिक योजनाएँ भी बना सकते हैं।
- इन सभी योजनाओं में, विशेष रूप से 'दैनिक नियोजन' में लचीलापन होना चाहिए क्योंकि कभी-कभी इसमें बदलाव करने पड़ते हैं, यहाँ तक कि बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों और दिए जाने वाले उत्तरों के आधार पर शिक्षक को अपने शिक्षण-अधिगम के तरीकों में बदलाव/सुधार करना पड़ सकता है।
- बच्चों को सीखने के लिए इस प्रकार के कार्य दिए जाने चाहिए, जो उन्हें कक्षा में और कक्षा के बाहर व्यक्तिगत और समूह में स्वयं करके देखने और चिंतन करने के अवसर देते हों। ये कार्य ऐसे हों जो पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं और सीखने के निर्धारित प्रतिफलों के अनुसार विभिन्न कौशलों तथा मूल्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ बच्चों को अवलोकन करने, अन्वेषण करने, प्रश्न करने, अनुभव करने और विभिन्न संकल्पनाओं पर अपनी समझ विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हों।
- विद्यार्थियों को दिया जाने वाला फ़ीडबैक, कार्य-आधारित, नियमित तथा प्रासंगिक होना चाहिए। यह कार्य विशिष्ट होना चाहिए, यानी सीखने-सिखाने के दौरान बच्चों का आकलन करते समय, शिक्षक फ़ीडबैक दे सकते हैं, जो तुरंत या कार्य की समाप्ति पर दिया जा सकता है, ताकि वह बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में रुकावट न बने।
- फ़ीडबैक बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि दो विद्यार्थियों ने गणित में एक जैसी गलती की हो, परंतु एक जैसा फ़ीडबैक उनके लिए लाभदायक न हो।
- ऐसे संकेत बच्चों के सीखने में बहुत अधिक सहायता करते हैं, जो उनके सोचने की प्रक्रिया को संभावित समाधानों की ओर प्रेरित करें।

- फ़ीडबैक इस प्रकार दिया जाए कि वह बच्चे को सीखने की प्रक्रिया जारी रखने व उसका आनंद लेने के लिए प्रेरित करे। इस प्रक्रिया में शिक्षक को बच्चों की मदद करनी (scaffolding) चाहिए ताकि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया सुगम हो और उन्हें सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में मदद मिल सके।

‘बच्चों को मदद देना’(scaffolding) एक क्रिया है जो शिक्षण-अधिगम के दौरान बच्चे क्या जानते हैं और उन्हें क्या सीखने की आवश्यकता है, के बीच के अंतर को दूर करने का काम करती है। इस प्रक्रिया में, शिक्षक, साथी या अन्य व्यक्ति उन बच्चों को कार्य करने या किसी संकल्पना को समझने में मदद करते हैं, जिसे शुरू में वे अपने-आप नहीं कर पाते या समझ नहीं पाते। मदद की यह प्रक्रिया तब तक जारी रखी जा सकती है, जब तक कि बच्चे कार्य को अपने आप करने की जिम्मेदारी नहीं ले लेते।

- सी.सी.ई. के अंतर्गत आकलन का एक महत्वपूर्ण पहलू ‘सीखने के रूप में आकलन’ है। जैसे कि पहले भी चर्चा की गई है, इसे शिक्षकों द्वारा प्रभावी रूप से लागू करने की आवश्यकता है। इसके लिए, विद्यार्थियों को अपने स्वयं के सीखने की निगरानी (monitor) करने के लिए अवसर और स्थान उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के समय वे अपने स्वयं के काम का विवेचनात्मक ढंग से आकलन, चिंतन और विश्लेषण कर सकें। इससे विद्यार्थी अपने आप अपनी खूबियों और कमियों को पहचानने में सक्षम हो पाएंगे।
- पहले उन्हें अपनी कमियाँ स्वयं पहचानने के मौके दें और फिर उन्हें इस प्रकार से फ़ीडबैक दें, कि वे अपनी कमियों को स्वयं दूर कर सकें।
- विद्यार्थियों को ऐसे अवसर लगातार दिए जाने चाहिए जहाँ उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक गतिविधि में स्वयं का आकलन करने और अपने साथियों के कार्य पर विमर्श करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। शिक्षक समय-समय पर विद्यार्थियों की मदद अवश्य करते रहें।
- शिक्षक, विद्यार्थियों की मदद से खाके (rubrics) विकसित कर सकते हैं, जिनका शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों ही विभिन्न कार्यों का आकलन करने में इसका उपयोग कर सकते हैं।
- विभिन्न कार्यों के लिए रूब्रिक्स बनाने के लिए मानदंडों को सुनिश्चित करने की ज़रूरत है। इन मानदंडों का सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप होना ज़रूरी है।

रूब्रिक्स विद्यार्थियों के कार्य को परखने के लिए मानदंडों का एक समूह होता है जिसमें कार्य प्रदर्शन की गुणवत्ता के स्तरों का वर्णन होता है। रूब्रिक्स का उपयोग विद्यार्थियों के कार्य प्रदर्शन की प्रक्रिया और प्राप्त परिणामों के आकलन के लिए किया जा सकता है। रूब्रिक्स का उपयोग मूल्यांकन करने में कार्य प्रदर्शन और विवरणों के मिलान द्वारा किया जाता है। इस अर्थ में रूब्रिक्स विवरणात्मक होते हैं। अतः इनका उपयोग सिर्फ़ ग्रेड, अंकों या जाँच- सूचियों द्वारा विद्यार्थी के कार्यों को परखने के लिए नहीं किया जा सकता। प्रभावशाली रूब्रिक्स में कार्य प्रदर्शन के मानदंड स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं। अध्याय 5 में इसके कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

- मानदंड सुस्पष्ट होने चाहिए, उदाहरण के लिए, 'स्वच्छता' एक अच्छा मानदंड नहीं है क्योंकि 'स्वच्छ' शब्द अपने-आप में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।
- जब विद्यार्थियों का आकलन रूब्रिक्स के आधार पर किया जाए तो ध्यान रखें कि विभिन्न कार्यों से अपेक्षाएँ बिल्कुल स्पष्ट हों, जिससे विद्यार्थियों को उन्हें समझने और आसानी से उपयोग करने में मदद मिल सके।
- रूब्रिक्स-आधारित स्व-आकलन, साथी-आकलन या शिक्षकों द्वारा किया जाने वाला आकलन विद्यार्थियों को अच्छी तरह कार्य करने में मदद करता है।
- प्रत्येक गतिविधि का रूब्रिक्स बनाकर आकलन नहीं किया जा सकता। रूब्रिक्स का उपयोग परियोजना कार्यों और कुछ बनाने और करने संबंधी गतिविधियों आदि में किया जा सकता है।
- यह अपेक्षा नहीं की जाती कि विद्यार्थी शुरुआती कक्षाओं में ही अपना आकलन अपने आप कर सकेंगे। फिर भी यह महत्वपूर्ण है कि उनमें समय के साथ अपने स्वयं के काम की विवेचनात्मक समीक्षा के कौशल विकसित हो जाएँ। इसके लिए शुरू से ही उन्हें अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में शिक्षकों को धैर्य रखना चाहिए।

4.3.2 रिकॉर्ड करना और रिपोर्ट करना

- प्रत्येक पाठ्यचर्या के क्षेत्र में दिए गए सीखने के प्रतिफल विद्यार्थियों की प्रगति को मॉनीटर करने के लिए एक समग्र रूपरेखा उपलब्ध करवाते हैं। साथ ही ये बच्चों के सीखने की प्रक्रिया और उनके विकास का एक व्यापक चित्र भी प्रस्तुत करते हैं।
- शिक्षक को चाहिए कि जब बच्चे सीखने के विभिन्न कार्यों में लगे हों तब उनका निरंतर अवलोकन करें। यह ज़रूरी नहीं कि सीखने की प्रगति को प्रतिदिन रिकॉर्ड किया जाए।
- विद्यार्थियों के विशेष कार्य प्रदर्शन और व्यवहार संबंधी अवलोकनों को ही रेखांकित करने की आवश्यकता है। इससे विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही अपने कार्य के बारे में चिंतन और समीक्षा आसानी से कर सकेंगे। इन आकलनों को एक डायरी या लॉगबुक में नोट किया जा सकता है। (परिशिष्ट I)
- जब भी आवश्यकता हो या जब भी अवसर मिले, व्यक्तिगत व सामाजिक गुण (PSQs) दर्शाने वाले सीखने के प्रतिफलों पर अवलोकनों को नोट किया जा सकता है।
- अपनी डायरी या लॉगबुक में ऐसी जानकारी रिकॉर्ड करने के लिए शिक्षक अपने-अपने तरीके अपना सकते हैं। इसके लिए किसी तरह के लिखित संकेत की ज़रूरत नहीं है।

लॉगबुक कोई भी एक नोटबुक या रिकॉर्ड बुक हो सकती है, जिसमें हर बच्चे के रिकॉर्ड दर्ज करने के लिए पर्याप्त स्थान/पृष्ठ हों। इस लॉगबुक में अवलोकन के आधार पर बच्चों की सीखने की प्रगति, उनके व्यक्तिगत-सामाजिक गुण (PSQ) और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों को दर्ज किया जाना चाहिए जिससे बच्चों को अपने सीखने को बेहतर बनाने में मदद मिल सके।

- यह पता लगाने के लिए कि बच्चे सीखने के अपेक्षित लक्ष्यों की ओर बढ़ रहे हैं, शिक्षकों को यह जानने की ज़रूरत है कि सीखने के प्रतिफलों को किस सीमा तक प्राप्त किया जाना चाहिए।
- बच्चों की प्रगति कहाँ तक हो पाई है, इसका मूल्यांकन पाठ, थीम या किसी इकाई के पूरा होने के बाद किया जा सकता है।
- प्रयोग, प्रेक्षण, चित्र पढ़ना, भ्रमण आदि गतिविधियाँ, प्रश्न व चर्चा करना, परियोजना और अन्वेषण जैसी पद्धतियाँ चाहे वे व्यक्तिगत रूप से करवायी जाएँ या फिर सामूहिक रूप से, सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में विद्यार्थियों की मदद करती हैं और मूल्यांकन के लिए आँकड़े उपलब्ध करवाती हैं।
- सीखने के अपेक्षित प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए पद्धतियों और कार्यनीतियों का चयन उपलब्ध संसाधनों तथा निर्धारित जानकारी पर निर्भर करता है।
- शिक्षण-अधिगम की विभिन्न नीतियों और पद्धतियों का लक्ष्य सीखने के विभिन्न प्रतिफल प्राप्त करना है। एक कार्यनीति से एक या एक से अधिक सीखने के प्रतिफल प्राप्त किए जा सकते हैं।
- बच्चों के कार्य-प्रदर्शन सीखने के अपेक्षित प्रतिफलों का उत्तम संकेतक है। परंतु कार्य-प्रदर्शन अपने आप में सीखने के प्रतिफल नहीं होते। वे केवल सीखने की प्रगति को दर्शाते हैं।
- बच्चों के कार्य-प्रदर्शन और कार्यों में उनकी भागीदारी के आकलन के लिए रूब्रिक्स विकसित किए जा सकते हैं।
- रूब्रिक्स को बनाने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों को शामिल करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें केवल मूल्यांकन के मानदंडों की जानकारी ही नहीं देता, बल्कि उनमें सीखने और आकलन करने की ज़िम्मेदारी का भाव भी पैदा करता है।
- आकलन की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी का स्तर उनके विकास के स्तर के अनुसार बढ़ाते जाना चाहिए। जैसे कि, पूर्व प्राथमिक से प्राथमिक और फिर उच्च प्राथमिक कक्षाओं में क्रमशः भागीदारी को बढ़ाना चाहिए। सभी बच्चों को ऐसे अवसर देने की आवश्यकता है।
- सीखने के प्रतिफलों के संदर्भ में व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों (PSQs) का आकलन अनौपचारिक अवलोकन द्वारा नियमित रूप से उस समय किया जा सकता है जब विद्यार्थी सीखने की विभिन्न गतिविधियों को कर रहे हों।

(क) बच्चों के सीखने की प्रगति के साक्ष्य इकट्ठा करना

बच्चों के सीखने की जानकारी या आँकड़े वे साक्ष्य हैं, जिन्हें सुव्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड किया जाना चाहिए, जिससे कि पूरे अकादमिक वर्ष में ज़रूरत पड़ने पर इन साक्ष्यों की मदद ली जा सके। ऐसा करने के लिए पोर्टफोलियो बनाना और उसकी मदद लेते रहना एक महत्वपूर्ण तरीका है।

- विद्यार्थियों द्वारा पूरे किए गए कार्यों, जैसे—कार्य पत्रकों (वर्कशीट), परियोजनाओं, दत्तकार्यों, परीक्षणों आदि को पोर्टफोलियो में शामिल किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो का तात्पर्य एक प्रकार की ऐसी फ़ाइल, फ़ोल्डर, पॉकेट या स्थान से है जो प्रत्येक बच्चे के लिए तैयार किया जाता है। इसमें एक अवधि में एक बच्चे द्वारा किए गए उसके कार्यों का विवरण इकट्ठा किया जाता है। इसमें लिखित सामग्री शामिल हो सकती है (वर्कशीट, रचनात्मक लेखन के नमूने, प्रश्न-पत्र, कक्षा के बाहर की गई गतिविधियों की रिपोर्ट, जैसे—नज़दीकी पोस्ट ऑफ़िस, बैंक आदि की जानकारी), चित्रकारी, फ़ोटो या शिक्षकों द्वारा किए गए अवलोकनों का रिकॉर्ड, दूसरे लोगों द्वारा किए गए अवलोकन संबंधी रिकॉर्ड (बच्चे को या बच्चे के लिए, मित्रों, परिवार के सदस्यों, किसी और के द्वारा लिखे गए पत्र), शिल्प कार्य (पेपर फ़ोल्डिंग, पेपर कटिंग, ऑरीगेमी, ग्रीटिंग कार्ड बनाना आदि), एकत्रित सामग्री (पत्तियाँ, वस्त्र, डाक टिकट, पुस्तकों की सूची आदि), मौखिक गतिविधियों या स्वयं बच्चे द्वारा प्रस्तुतियों का रिकॉर्ड (दूसरों के लिए अपने विचार/भावनाएँ, शिक्षकों या स्वयं बच्चों द्वारा बनाए गए प्रश्नों पर स्व-आकलन शीटों के नमूने)।

- इस बात पर ध्यान दें कि पोर्टफोलियो एक अवधि में बच्चे द्वारा किए गए समस्त कार्यों का एक संग्रह है, न कि केवल उनके सर्वोत्तम कार्यों का संग्रह।
- इस संग्रह को इस प्रकार से व्यवस्थित करना चाहिए कि यह एक अवधि, जैसे एक माह, तीन माह और वर्ष भर में बच्चे की प्रगति को दर्शाए।
- पोर्टफोलियो के माध्यम से अध्यापक सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों के सीखने में बदलाव से जुड़े साक्ष्य प्राप्त करते हैं और उपयोगी जानकारी विभिन्न पणधारकों, विशेषकर माता-पिता/अभिभावकों और स्वयं बच्चों को उपलब्ध कराते हैं।
- पोर्टफोलियो माता-पिता/अभिभावकों को अपने बच्चों की योग्यताओं और उनकी रुचियों के बारे में और अधिक जानने में मदद करता है, जिनके बारे में उन्हें घर पर पता नहीं चल पाता है। यह उन्हें शिक्षकों के साथ बच्चों के कार्य प्रदर्शन, प्रगति और विकास पर चर्चा करने में मदद करता है।

सारणी 1

शिक्षण-अधिगम और आकलन के साथ सीखने के प्रतिफलों का एकीकरण

सीखने के प्रतिफल	सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	आकलन के तरीके	आँकड़ों के स्रोत
<ul style="list-style-type: none"> ● आस-पास के पौधों, जंतुओं, पक्षियों, वस्तुओं और स्थानों की अवलोकन योग्य विशेषताओं की पहचान करते हैं। ● विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करके समानताओं और असमानताओं के आधार पर वस्तुओं, पक्षियों और जंतुओं के समूह बनाते हैं। 	विभिन्न इंद्रियों के माध्यम से पौधों, पक्षियों, जंतुओं, स्थानों आदि के अवलोकन के लिए फ़्रील्ड विजिट/तस्वीरों/वीडियो आदि का आयोजन प्रेक्षकों की मौखिक/लिखित अभिव्यक्ति कला और शिल्प संबंधी गतिविधियाँ रोल प्ले।	वर्कशीट, दत्तकार्य, परियोजनाएँ, रचनात्मक गतिविधियाँ, शिक्षक द्वारा अवलोकन, स्व-आकलन, साथी आकलन	परियोजना रिपोर्ट, पोर्टफोलियो, बच्चों की नोटबुक, लॉगबुक

- सीखने के प्रतिफलों, जैसे व्यक्तिगत-सामाजिक गुणों और कुछ दूसरी विशेषताओं की प्रगति के मूल्यांकन के लिए एक तय अवधि में बच्चे के कार्यों पर चिंतन की आवश्यकता होती है। इसमें पोर्टफोलियो, लॉगबुक तथा बच्चों की नोटबुक (कॉपियाँ) आदि सहायक हो सकती हैं। यह केवल अनेक साक्ष्यों को ही उपलब्ध नहीं कराएगा, बल्कि सभी बच्चों के साथ-साथ विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के सीखने और विकास की प्रगति को भी जानने में मदद करेगा। इस प्रकार की जानकारी विद्यार्थी के किसी कार्य विशेष का दृष्टांत और सीखने के दौरान किए गए अवलोकनों के निष्कर्ष भी हो सकते हैं। इन अवलोकनों के आधार पर गुणात्मक साक्ष्य एकत्र किए जाएँगे जो कि सीखने के विशिष्ट प्रतिफलों (परिशिष्ट-1) के विवरण होंगे।

दृष्टांत के रिकॉर्ड छोटे हों और उनमें बच्चों के कार्य प्रदर्शनों के महत्वपूर्ण विवरण और किसी आकस्मिक घटना/स्थिति में उनके व्यवहार को दर्ज किया जाना चाहिए। आमतौर पर इन्हें दर्ज नहीं किया जाता है, परंतु ये व्यक्तिगत सामाजिक गुणों के आकलन में काफ़ी सहायक सिद्ध होते हैं।

- विद्याथिर्यो पर किए प्रेक्षणों/अवलोकनों को दृष्टांत रिकॉर्ड के रूप में दर्ज/अंकित किया जा सकता है (पर्चियों, नोटकार्ड, चिपकन पट्टी आदि पर) जिन्हें हर विद्यार्थी के लिए निर्धारित पन्ने पर चिपकाया जा सकता है या उन्हें शिक्षकों द्वारा इस कार्य के लिए विशेष रूप से तैयार की गई लॉगबुक या नोटबुक में दर्ज किया जा सकता है।
- बच्चों के सीखने का मूल्यांकन उस समय करना उचित नहीं है जब वे संकल्पनाओं को समझने के दौर से गुज़र रहे होते हैं या जब सीखने के लिए उन्हें पर्याप्त समय ही न मिल पाया हो। उस समय अधिगम साक्ष्य विद्यार्थियों के प्रदर्शन के स्तर को दर्शाने के लिए उपयोग में नहीं लाए जाने चाहिए। इसके लिए कुछ अंतराल के बाद (जो कि एक इकाई, थीम या त्रैमासिक अंतराल हो सकता है) किए गए आकलन का उपयोग किया जा सकता है।
- लिखित टेस्ट भी आकलन के वैध उपकरण हैं, परंतु उनके तर्कसंगत उपयोग के लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता है, अर्थात् यदि हम लिखित परीक्षण (टेस्ट) द्वारा मूल्यांकन करते हैं तब हमें यह सुनिश्चित होना चाहिए कि इस परिस्थिति में संबंधित सीखने के प्रतिफलों का लिखित परीक्षण के तरीके से ही सर्वोत्तम मूल्यांकन किया जा सकता है।

सारणी 2

शिक्षण-अधिगम और आकलन के साथ सीखने के प्रतिफलों का एकीकरण

सीखने के प्रतिफल	सुझाई गई शैक्षणिक प्रक्रियाएँ	आकलन के तरीके	आँकड़ों के स्रोत
दिन-प्रतिदिन के जीवन में पौधों,	बच्चों को निम्नलिखित रूप में प्रोत्साहित किया जा सकता है—	कार्य पत्रक (वर्कशीट),	अनुभवों, परियोजनाओं,

<p>जंतुओं, वृद्धजनों और विशेष आवश्यकता वाले लोगों के प्रति संवेदनशीलता प्रकट करते हैं।</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● सामूहिक गतिविधियों में पहल करने के लिए, जैसे कि घर के भीतर/घर के बाहर/स्थानीय/समकालिक गतिविधियाँ, खेल या इसी प्रकार के अन्य कार्य। ● पौधों का रखरखाव, पक्षियों और जंतुओं को भोजन देने जैसे कार्यों में भाग लेने के लिए। ● आस-पास के पालतू जानवरों, घरेलू जानवरों, पक्षियों और अन्य जानवरों के साथ अपने संबंधों को साझा करना। ● बड़ों/वृद्धजनों और विशेष आवश्यकता वाले लोगों के साथ पारस्परिक संवाद करना और उनकी मदद करना। 	<p>परियोजनाएँ, शिक्षक द्वारा अवलोकन</p>	<p>पोर्टफोलियो, दृष्टान्तों की मौखिक/लिखित रिपोर्ट</p>
--	--	---	--

- विद्यार्थियों के कार्य प्रदर्शन के गुणात्मक विवरण सदैव सहायक होते हैं, क्योंकि ये बच्चों को स्वयं में सुधार लाने के लिए गहरी समझ बनाते हैं।

(ख) प्रगति रिपोर्ट तैयार करना

- यह वर्ष में हर तीन माह में एक बार बनाई जा सकती है हालाँकि इस बारे में संबंधित अधिकारी/संस्थाएँ अपना अंतिम निर्णय ले सकती हैं।
- अध्यापकों को चाहिए कि वे प्रगति-रिपोर्ट तैयार करने के लिए साक्ष्यों को आधार बनाएँ। साक्ष्य से तात्पर्य है—एक अवधि में विविध स्रोतों से इकट्ठे किए आँकड़े और व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड की गई जानकारी। अध्यापक मानदंडों को संदर्भ में रखते हुए बच्चों के सीखने की प्रगति का प्रोफाइल तैयार करने में इन साक्ष्यों का विश्लेषण करें और इन पर अपनी टिप्पणी दें। ये मानदंड पाठ्यचर्या द्वारा निर्धारित प्रत्येक पाठ्यचर्या के क्षेत्र के सीखने के प्रतिफलों पर आधारित होने चाहिए। (परिशिष्ट II)
- यह प्रोफाइल प्रत्येक कक्षा के लिए विभिन्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के अंतर्गत सीखने के सभी प्रतिफलों की प्रगति को दर्शाएगा। यह स्वयं में समग्र होना चाहिए यानी की ज्ञान, कौशल और स्वभाव, सभी का समग्रता से आकलन हो।
- सीखने के प्रतिफलों के संदर्भ में बच्चों का प्रोफाइल राष्ट्रीय/राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा सुझाए गए स्तरवार पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार, प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में समावेशित किया गया है, जबकि उच्च प्राथमिक स्तर पर उन्हें भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के साथ पृथक पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के रूप में रखा गया है। इस प्रकार, सी.सी.ई. के अंतर्गत सीखने की प्रगति को विभिन्न विषयों के लिए तय किए गए सीखने के प्रतिफलों के अनुसार आकलित किया जाएगा।

- सीखने के प्रत्येक प्रतिफल की प्राप्ति कर ली गई है या नहीं, इसका मूल्यांकन निम्नलिखित पैमाने के अनुसार हो सकता है—
 - अपेक्षित स्तर तक पहुँचने के लिए बहुत अधिक मदद की आवश्यकता है।
 - उपयुक्त मदद और फ़ीडबैक के साथ बेहतर कर सकता है/ कर सकती है।
 - कार्य प्रदर्शन अपेक्षित स्तर के अनुसार या आयु उपयुक्त है।

यह पैमाना तीन या अधिक मापन बिंदुओं वाला हो सकता है, परंतु यह बच्चों के विकासात्मक स्तर के अनुरूप और तर्कसंगत होना चाहिए।

- कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे भी हो सकते हैं जो अपेक्षित स्तर से अधिक सीख पा रहे हों। इन्हें पहचान कर, प्रोत्साहित करने और उचित मदद देने की आवश्यकता है। ऐसे बच्चे अपने साथियों को सीखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।
- प्रगति रिपोर्ट में उनके कार्य-प्रदर्शन का विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए और यह बात उनके अभिभावकों को भी बतानी चाहिए। उनके अधिगम को और अधिक समृद्ध करने के लिए उन्हें उपयुक्त संसाधन या कार्यनीतियाँ भी सुझाई जा सकती हैं।
- शिक्षक मापन पैमाने के उपयुक्त स्तर पर सही का निशान लगा सकते हैं। साथ ही इसके समर्थन में सरल भाषा में गुणात्मक विवरण दिए जाने चाहिए। ये मात्र साक्ष्य-आधारित ही न हों, बल्कि अर्थपूर्ण और विशिष्ट भी हों और ये परिलक्षित करें कि बच्चे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। साथ ही सुझाव भी दें कि कमियों को दूर करने और सुधारने में साथी-समूहों, बड़ों और शिक्षकों द्वारा बच्चों की कैसे मदद की जा सकती है।
- किसी विषय की प्रगति रिपोर्ट में, यदि संभव हो तो कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ शामिल की जा सकती हैं। परंतु धीमी गति से सीखने वाली/ (ला), कमजोर, सुस्त जैसी टिप्पणियों का उपयोग नहीं होना चाहिए।
- इसमें ऐसी कोई भी टिप्पणी नहीं होनी चाहिए जो यह आभास करवाए कि एक बच्चे की तुलना दूसरे बच्चे से की जा रही है। बच्चे के कार्य-प्रदर्शन की तुलना उसके पिछले कार्य-प्रदर्शन के साथ की जा सकती है।
- मूल्यांकन में कोई अंक शामिल नहीं होने चाहिए। अतः किसी पाठ्यचर्या के क्षेत्र में कुल प्राप्तांकों/ ग्रेड देने या कुल प्राप्तांक देने का प्रश्न ही नहीं उठता।
- एक विशेष स्तर पर बच्चों के लिए पृथक प्रगति रिपोर्ट कार्ड रखा जा सकता है अर्थात् बच्चे के लिए एक प्रगति रिपोर्ट कार्ड प्राथमिक स्तर के लिए और एक पृथक कार्ड उच्च प्राथमिक स्तर के लिए।
- स्तरवार प्रगति रिपोर्ट कार्ड सभी स्तरों पर या किसी एक स्तर पर सीखने का प्रगतिक्रम देखने में भी मदद कर सकता है।

(ग) प्रगति रिपोर्ट साझा करना

- प्रत्येक बच्चे की प्रगति की जानकारी नियमित रूप से विभिन्न पणधारकों को दी जानी चाहिए। विशेष रूप से माता-पिता/अभिभावकों और स्वयं बच्चों को यह जानकारी देना बहुत महत्वपूर्ण है।
- वर्ष में यह जानकारी कम से कम हर तीन महीने में एक बार दी जाए और यदि आवश्यकता हो तो अधिक बार भी दी जा सकती है।
- अभिभावक-शिक्षक सभाओं में इस तरह की जानकारी देने के अवसर मिल जाते हैं। अतः अभिभावक-शिक्षक सभाओं का आयोजन नियमित रूप से, कम से कम तीन माह में एक बार करना चाहिए।
- माता-पिता और बच्चों से बातचीत सावधानीपूर्वक, रचनात्मक और सकारात्मक ढंग से करनी चाहिए। सीखने की प्रगति के बारे में बच्चों और माता-पिता, दोनों से एक साथ चर्चा करनी चाहिए, ताकि बच्चे के बारे में अधिक जानकारी मिल सके और सुधार के तरीके पता चल सकें।
- शिक्षक बच्चों के कार्य प्रदर्शन की तुलना अन्य बच्चों के साथ न करें और न ही माता-पिता को ऐसा करने हेतु प्रोत्साहित करें। सभी बच्चे अपने आप में अद्भुत एवं महत्वपूर्ण होते हैं और यदि उन्हें सीखने के सही अवसर दिए जाएँ तो वे अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रगति करेंगे। ऐसे में एक बच्चे को दूसरों के साथ किसी श्रेणीक्रम में रखना उसकी वृद्धि तथा विकास में बाधा पैदा करेगा। यह बात विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर भी लागू होती है।
- यह समझते हुए कि प्रत्येक बच्चा सक्षम होता है, यह महत्वपूर्ण है कि पहले प्रत्येक बच्चे की क्षमता पर विश्वास किया जाए और फिर उसको अपने आप में विश्वास करने में मदद की जाए। इसके पश्चात प्रत्येक बच्चे की प्रगति करने में मदद के लिए प्रयास करें।

चूँकि सी.सी.ई. मूल्यांकन की एक विद्यालय-आधारित पद्धति है, अतः गाँव, क्लस्टर, ब्लॉक, जिला, राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों की प्रगति को संग्रहित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्राप्त आँकड़ों को विद्यालय के स्तर पर ही रखा जाए तथा कहीं और किसी भी रूप में संग्रहित न किया जाए।

माता-पिता/अभिभावकों और बच्चों के साथ विकास तथा सीखने की प्रगति को साझा करने के साथ-साथ सीखने में रह गई कमियों को दूर करने के लिए सुझाव भी दिए जाने चाहिए। इससे संबंधित शिक्षक को अपने शिक्षण-अधिगम की समीक्षा करने और उसमें सुधार करने हेतु मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान और पिछली कक्षाओं या स्तरों की प्रगति रिपोर्ट उन शिक्षकों की भी मदद कर सकती है, जो बच्चों को अगली कक्षाओं या स्तरों में पढ़ाएँगे। इस प्रकार इसका डेटाबेस के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

4.4 शिक्षक विकास और व्यवस्थागत मुद्दे

4.4.1 सी.सी.ई. के लिए शिक्षकों का व्यावसायिक विकास

शिक्षक सी.सी.ई. को लागू करने में एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं, अतः शिक्षकों का व्यावसायिक विकास अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों की समझ बनाने के लिए कुछ बिंदुओं पर विचार करने की आवश्यकता है, जो इस प्रकार हैं—

- यह आवश्यक है कि शिक्षक को पाठ्यचर्या के क्षेत्र, उसकी अपेक्षाओं और सीखने के प्रतिफलों की जानकारी हो।
- शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास को शिक्षक विकास कार्यक्रमों का सतत और आवश्यक भाग माना जाना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक बच्चों में सीखने की प्रक्रिया में सुधार लाने वाला एक चिंतनशील और अनुभवी व्यक्ति बन सकेगा।
- किसी भी पाठ्यचर्या के क्षेत्र में सी.सी.ई. को लागू करने के लिए उन्हें संबंधित विषय की प्रकृति, शिक्षाशास्त्र और पद्धति को भी समझने की आवश्यकता है। अतः शिक्षण-अधिगम और आकलन को समग्रता के साथ करने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम नियोजित और संचालित किए जाने की आवश्यकता है।
- संबंधित अकादमिक अधिकारियों और सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षक-प्रशिक्षक संगठनों को इसके लिए प्रयास करने की ज़रूरत है।

4.4.2 व्यवस्थागत मुद्दे

- कार्य-दिवसों की उपयुक्त संख्या, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात और विषय-विशेष के शिक्षकों को लगाने से संबंधित मुद्दे आर.टी.ई. अधिनियम—2009 के अनुरूप औचित्यपूर्ण होने चाहिए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए आकलन विधियों को उनकी सीखने की आवश्यकताओं के अनुरूप सरल और सहज बनाया जा सकता है।
- आवश्यकतानुसार अतिरिक्त समय, विशेष सहायक सामग्री, ब्रेल, सुनने हेतु सहायक यंत्र, स्क्राइब (लेखन-सहायक), उपकरणों का प्रावधान, निर्देशों को बच्चों की समझ के अनुसार आसान बनाना, वैकल्पिक उपायों (जैसे—बच्चों के उत्तरों की श्रव्य-रिकॉर्डिंग का उपयोग), संबंधित निःशक्तताओं में विशेषज्ञों और माता-पिता की मदद लेने के लिए प्रावधान उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- सी.सी.ई. जो कि सतत प्रक्रिया होने के कारण शिक्षण-अधिगम के साथ चलता रहता है, यह बच्चों, उनके साथियों, शिक्षक और अन्य वयस्कों के मध्य सक्रिय पारस्परिक क्रियाओं पर निर्भर करता है। यह विद्यालय आधारित ही होगा, क्योंकि शिक्षक ही वह व्यक्ति है जो बच्चों के लिए निर्धारित पाठ्यचर्या को पूरा करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। अतः शिक्षकों को स्वायत्तता दी

जानी चाहिए कि वे शिक्षण-अधिगम और आकलन, दोनों के लिए कार्यनीतियों और संसाधनों को स्वयं चुन सकें या डिज़ाइन कर सकें और अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और योग्यताओं के अनुरूप उन्हें ढाल सकें।

- ये दिशानिर्देश सैद्धांतिक अर्थ में सी.सी.ई. के बारे में एकरूपता के साथ एक रूपरेखा उपलब्ध कराते हैं। इनमें सी.सी.ई. को आसानी से उपयोग में लाने के लिए विद्यालयों और शिक्षकों के लिए विभिन्न प्रावधानों में, जैसे—समय-सारणी, आकलन के लिए पाठ्यक्रम या विषयवस्तु, शिक्षण-अधिगम और आकलन कार्यनीतियाँ, आकलन की आवृत्ति, रिपोर्ट करने आदि में आवश्यक लचीलापन रखा गया है।
- इस प्रकार का लचीलापन अति आवश्यक है, उदाहरण के लिए, समय-सारणी में लचीलेपन का होना। यह शिक्षकों को विद्यालय में अपने उन विचारों को परखने में मदद करेगा, जो उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सीखे हैं। यह विद्यालय के पूरे समय के दौरान किया जाना चाहिए।
- शिक्षा अधिकारियों, पर्यवेक्षकों और निरीक्षकों को शिक्षक की स्वायत्तता का सम्मान करना चाहिए, उन्हें यह अहसास हो कि वे बच्चों को सिखाने के लिए पूर्ण रूप से योग्य और उत्तरदायी हैं।
- शिक्षक और बच्चों, दोनों के लिए सी.सी.ई. केवल भयमुक्त वातावरण में सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो सकता है।
- शिक्षकों को आपसी अनुभव साझा करने के लिए उपयुक्त स्थान या मंच का प्रावधान किया जा सकता है।
- शिक्षक इन संसाधनों को एकत्रित कर सकते हैं जैसे कि शिक्षण-अधिगम योजनाएँ, काम में लिए गए संसाधन/सामग्री, शिक्षण-अधिगम और आकलन के लिए प्रयुक्त कार्यनीतियाँ, कक्षा-कक्ष में पढ़ाने के लिए कोई नवाचार, सामने आए मुद्दे और समस्याएँ, क्या कारगर हो सकता है और क्या नहीं हो सकता इत्यादि।
- इस दिशा में शिक्षक पोर्टफोलियो सहायक हो सकता है। यह पर्यवेक्षकों को शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों की प्रशंसा करने में सक्षम बनाने के अलावा अन्य शिक्षकों को उपयोगी तथा गहन जानकारी उपलब्ध कराएगा। शिक्षकों द्वारा किए गए व्यवहारों को इसमें दर्ज किया जा सकता है और अन्य शिक्षकों को प्रेषित किया जा सकता है।
- प्रशासकों को चाहिए कि वे शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करें, क्योंकि आकलन तभी हो सकता है जब बाल-केंद्रित शिक्षण-अधिगम को सुनिश्चित करने वाली उपयुक्त परिस्थितियाँ विद्यमान हों।
- मुख्याध्यापक/प्राचार्य, प्रशासकों को शिक्षकों के सामने आने वाली किसी भी समस्या को हल करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसके लिए नियमित रूप से उनकी परस्पर बातचीत/चर्चा आवश्यक है।

सी.सी.ई. की प्रक्रिया को विद्यालय-आधारित मूल्यांकन के रूप में क्रियान्वित करने में प्रशासकों अभिभावकों, शिक्षकों और बच्चों, सभी की समान ज़िम्मेदारी है।

4.5 याद रखने योग्य बातें

- सी.सी.ई. के अंतर्गत आकलन न केवल सतत और व्यापक होना चाहिए, बल्कि विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों सहित, सभी बच्चों के लिए भयमुक्त वातावरण भी होना चाहिए। इसमें असंगत तुलना करना, लेबल लगाना और परीक्षा के भय को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।
- बच्चों के सीखने और विकास में बच्चों और माता-पिता को सक्रिय भागीदारी के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
- स्व-आकलनों और साथी-आकलनों के अवसर, जो बच्चों को अपने अधिगम का उत्तरदायित्व लेने और धीरे-धीरे स्व-अधिगम की ओर प्रगति करने में सक्षम बनाते हैं, हर स्तर पर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- बच्चों की प्रगति रिपोर्ट के आधार पर विभिन्न पणधारकों जैसे कि माता/पिता/अभिभावकों, शिक्षकों और स्वयं विद्यार्थियों को विद्यार्थियों की उपलब्धियों तथा और अधिक प्रयत्न करने के उपायों के बारे में शिक्षण-अधिगम और त्रैमासिक अभिभावक-शिक्षक सभाओं में प्रतिपुष्टि (फीडबैक) तथा रचनात्मक सुझाव दिए जा सकते हैं।
- वार्षिक अकादमिक कैलेंडरों के लिए प्रत्येक तिमाही में पूरा किए जाने वाले पाठ्यक्रम की विवेकपूर्ण योजना पहले से बनाई जा सकती है। ऐसी योजनाओं के विकास के लिए शिक्षकों के सुझावों और भागीदारी को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। यदि संभव हो, ऐसी योजना विद्यालय स्तर पर बनाई जा सकती है।
- संसाधन और गतिविधियाँ केवल सुझावों के रूप में हो सकती हैं। शिक्षकों को अधिगम-सहायक सामग्री या कार्यनीतियाँ चुन सकने या बनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- आकलन के प्रश्नों, अभ्यासों, दत्तकार्यों को प्रक्रिया-आधारित होना चाहिए, जो बच्चों को समीक्षात्मक रूप से सोचने और खोज करने के अवसर दें। उन्हें बच्चों के रटने का आकलन नहीं करना चाहिए।
- यदि लिखित परीक्षाओं (टेस्ट) में मूल्यांकन के दौरान अंकों या ग्रेडों का उपयोग किया जाता है तभी गुणात्मक विवरण भी साथ में देने चाहिए, क्योंकि अंक या ग्रेड आपको अधिगम स्तर तय करने में तो मदद कर सकते हैं परंतु गुणात्मक विवरण कमियों व मजबूत पक्ष को पहचानने में सहयोगी होते हैं और सुधार के लिए सुझाव देते हैं।
- पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत सीखने के अलग-अलग प्रतिफलों के लिए निर्धारित विभिन्न स्तर शिक्षकों को यह उपयोगी जानकारी देते हैं कि कौन-कौन से बच्चे कौन-कौन से अधिगम-प्रतिफल प्राप्त नहीं कर सके हैं।

- तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आँकड़े केवल विद्यार्थियों को ही गहन जानकारी नहीं देते, बल्कि शिक्षकों को भी बताते हैं कि शिक्षण-अधिगम की समीक्षा के आधार पर अगली तिमाही में सीखने-सिखाने के लिए किस प्रकार के प्रयास किए जाएँ।
- किसी विशेष कक्षा/स्तर/विद्यालय में बच्चों की प्रगति की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट को इसी प्रकार के विश्लेषण द्वारा समझा जा सकता है।
- प्रोफाइलों की सॉफ़्ट (कंप्यूटरीकृत) प्रतियों को बनाकर रखना, बहुत उपयोगी हो सकता है।

5

रूब्रिक्स—कुछ उदाहरण

विभिन्न विषयों के कार्यों के मूल्यांकन के लिए रूब्रिक्स (मानदंड समूह) के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। इनके अंतर्गत कार्य की विस्तृत जानकारी दी जा सकती है, जो उपयोगकर्ताओं के उपलब्ध समय, कार्य की प्रकृति आदि पर निर्भर होती है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे इनके अनुसार या इनके आधार पर कार्य करेंगे, तो इनको बनाने और उपयोग करने के लिए उनकी क्षमताओं को ध्यान रखने की आवश्यकता है।

1. पाठ्यचर्या के क्षेत्र—गणित

कार्य—मूल आकृतियों की पहचान

मानदंड	स्तर I	स्तर II	स्तर III
आकृतियों की पहचान	दी हुई आकृति के समान/ समरूप आकृतियों वाली जानी-पहचानी वस्तुओं (दी गई/आस-पास विद्यमान) की सहायता से कुछ प्रयासों के बाद पहचान करती(ता) है।	दी हुई आकृति के समान/ समरूप आकृतियों वाली जानी-पहचानी वस्तुओं (दी गई/आस-पास विद्यमान) की सहायता से पहचान करती (ता) है।	दी हुई आकृति के समान/ समरूप आकृतियों (जो पहले देखी तो हैं, परंतु आस-पास मौजूद नहीं हैं) की सहायता से पहचान करती (ता) है।
आकृतियों और उनके लक्षणों(features) के विषय में बताना	कुछ प्रयासों के बाद किसी आकृति का अनौपचारिक रूप से नाम बताने के लिए उसके लक्षणों का सामान्यीकरण कर सकती (ता) है।	अनौपचारिक तथा औपचारिक रूप से आकृति का नाम बताने के लिए उसके लक्षणों का सामान्यीकरण कर सकती (ता) है।	अनौपचारिक तथा औपचारिक रूप से आकृति का नाम बताने के लिए उसके लक्षणों का सामान्यीकरण कर सकती (ता) है और विभिन्न उदाहरण देती (ता) है।
विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से आकृतियों की कल्पना (visualisation) करना	विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से किसी दी गई आकृति का चित्र बनाने में सक्षम, परंतु नाम बताने में सक्षम नहीं है।	विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से किसी दी गई आकृति का चित्र बनाने और नाम बताने में सक्षम है।	विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से किसी दी गई आकृति का चित्र बनाने, नाम बताने और उसे समझाने में सक्षम है।
कल्पनाशीलता/ सृजनात्मकता	दूसरों की नकल करके/संकेत लेकर चित्रकारी/कला और शिल्प द्वारा चित्रों/वस्तुओं की रचना का प्रयास करती (ता) है।	चित्रकारी/कला और शिल्प द्वारा चित्रों/वस्तुओं की स्वतंत्र रूप से रचना करती (ता) है।	नए विचार देती (ता) है और चित्रकारी/कला द्वारा नवाचारी चित्रों/वस्तुओं की रचना करती (ता) है।

2. पाठ्यचर्या के क्षेत्र—पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान

कार्य—सर्वेक्षण

मानदंड	स्तर I	स्तर II	स्तर III
समस्याओं की पहचान	कुछ विचार देती (ता) है, परंतु वे मुद्दे से संबंधित नहीं होते हैं।	मुद्दे-आधारित समस्याओं की पहचान के लिए कुछ संकेतों या खोजबीन की आवश्यकता है।	अपने आप समस्याओं पर आधारित मुद्दों की पहचान करती (ता) है।
प्रश्न बनाना	साथियों की मदद से प्रश्न बनाती (ता) है।	स्वयं नए प्रश्न बनाती (ता) है और शिक्षक तथा साथियों की मदद से उन्हें अंतिम रूप देती (ता) है।	स्वतंत्र रूप से प्रश्न बनाती (ता) है।
आँकड़े इकट्ठा करना	थोड़ी पूछताछ के लिए कुछ प्रश्न पूछती (ता) है।	तरह-तरह की खोजबीन के लिए अनेक प्रश्न पूछती (ता) है।	गहन पूछताछ करती (ता) है और उसी समय प्रश्नों में बदलाव करती (ता) है या नए प्रश्न बनाती (ता) है।
आँकड़ों को दर्ज (रिकॉर्ड) करना	उत्तरों की रिकॉर्डिंग व्यवस्थित नहीं है।	इकट्ठी की गई जानकारी को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करती (ता) है।	जानकारी को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड और प्रस्तुत करती (ता) है।
निष्कर्ष निकालना	जानकारी का कुछ अर्थ निकालती (ता) है।	जानकारी का उपयुक्त अर्थ निकालती (ता) है।	जानकारी का अर्थ निकालती (ता) है और तर्क के साथ समझाती (ता) है।
प्रतिवेदन (रिपोर्ट) करना	रिपोर्ट तैयार करती (ता) है, परंतु प्रस्तुत करते समय आत्मविश्वासपूर्ण नहीं है।	रिपोर्ट तैयार करती (ता) है और आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति करती (ता) है।	व्यापक और सुस्पष्ट रिपोर्ट तैयार करती (ता) है और आत्मविश्वास के साथ तर्कसंगत रूप से समझाती (ता) है।
दूसरों के साथ काम करना	दूसरों के साथ काम करने में कभी-कभी कठिनाई महसूस करती (ता) है।	समूहों में धैर्यपूर्वक काम करती (ता) है।	समूहों में धैर्यपूर्वक काम करती (ता) है और दूसरों की सहायता भी करती (ता) है।

3. पाठ्यचर्या के क्षेत्र—कला शिक्षा

कार्य—बेकार वस्तुओं से कठपुतलियाँ बनाना

मानदंड	स्तर I	स्तर II	स्तर III
थीम/संकल्पना (नवाचारी, सुस्पष्टता आदि)			
उपयोग की गई सामग्री (लागत प्रभावी, पर्यावरण-अनुकूल या कोई अन्य)			
सौंदर्य बोध (आकर्षण)			
कोई अन्य			

4. पाठ्यचर्या के क्षेत्र—हिंदी

कार्य—सामूहिक वाद-विवाद

मानदंड	स्तर I	स्तर II	स्तर III
थीम के साथ संबंध	रखे गए प्रस्ताव थीम से मेल नहीं खाते।	टीम टॉपिक के भाव को समझ पा रही है।	टीम ने टॉपिक के सभी आयामों पर अपनी भरपूर समझ प्रदर्शित की।
विषय-वस्तु	अधिकांश जानकारी गलत थी।	अधिकांश जानकारी स्पष्ट और सही थी।	दी गई जानकारी स्पष्ट, सही और विस्तृत थी।
विचारों का संगठन करना और धारा-प्रवाहिता पर जोर देना	अधिकांश तर्क प्रासंगिक नहीं थे और बीच-बीच में से कई चीजें छोड़ दी गई थी।	अधिकांश तर्क प्रासंगिक थे और कुछ चीजें अनायास छूट गईं।	सभी तर्क प्रासंगिक थे और तर्क के एक बिंदु से दूसरे पर जाना तर्क संगत था।
साक्ष्य उद्धृत करना	तर्क के बिंदु, तथ्यों और आँकड़ों के साथ प्रस्तुत नहीं किए गए।	प्रत्येक मुख्य बिंदु तथ्यों और आँकड़ों पर आधारित था।	सभी मुख्य बिंदु प्रासंगिक तथ्यों और आँकड़ों पर आधारित थे।
शब्दावली और उच्चारण	शब्दावली बहुत समृद्ध नहीं थी। अधिकांश शब्दों का उच्चारण सही नहीं था।	शब्दावली साधारण थी। अधिकांश शब्दों का उच्चारण सही था।	समृद्ध शब्दावली का उपयोग किया गया। उच्चारण सही था।
दूसरों के विचारों का आदर	कई बार टीम ने दूसरों के विचारों का अनादर किया।	टीम ने बहुत कम दूसरी टीम के विचारों का आदर और प्रशंसा की।	टीम ने दूसरी टीम के विचारों का आदर और प्रशंसा की।



परिशिष्ट



बच्चे की प्रगति को रिकॉर्ड और रिपोर्ट करने के लिए प्रस्तावित प्रारूप

परिशिष्ट 1

बच्चे की प्रगति को रिकॉर्ड करने के लिए प्रस्तावित प्रारूप

नीचे प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में कुछ अवधारणाओं और मुद्दों के सीखने-सिखाने के लिए शिक्षण-अधिगम और आकलन की कार्यनीतियाँ दी गई हैं। साथ ही, सीखने के लक्षित प्रतिफल भी दिए गए हैं।

तिमाही—I

विषय—पर्यावरण अध्ययन

कक्षा—III

अवधारणाएँ और मुद्दे

पेड़-पौधों और पत्तियों में विविधता (आकृति, रंग, साइज़, गंध, बनावट), पत्ती के डिज़ाइन के नमूने (motifs) आदि, जंतुओं और पक्षियों के बारे में बच्चों के विचार, उनके रहने के स्थान, भोजन की आदतें, उनकी विशेषताएँ, जैसे—पंख, आवागमन, आवाज़ें, पक्षियों को दाना खिलाना, पेड़-पौधों से प्राप्त भोजन, कच्चे/पकाकर खाए जाने वाले खाद्य पदार्थ, भोजन पकाने के तरीके, विभिन्न प्रकार के ईंधन, बर्तन, स्टोव, आयु के साथ भोजन में बदलाव, जंतुओं के लिए भोजन आदि।

शिक्षण-अधिगम और आकलन-कार्यनीतियाँ

- बच्चों की वर्तमान समझ का आकलन करने हेतु परिचर्चा, चित्रकारी, वर्कशीट का उपयोग करते हुए उनके विचारों, दिन-प्रतिदिन के अनुभवों की जाँच-पड़ताल करना।
- जब भी आवश्यकता हो, सीखने के अनुभव उपलब्ध करवाना, जैसे—पेड़-पौधों और जंतुओं के निर्देशित/मुक्त प्रेक्षण/विद्यालय/रसोई घर, पक्षियों और जंतुओं को खाना देना, मिट्टी से चीज़ें बनाना, पौधे लगाना, भूमिका निर्वाह, खेल, कठपुतली का खेल, बड़ों से बातचीत, शिशुओं, वयस्कों और वृद्धों की भोजन की आदतों का अवलोकन करना, चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, सर्वेक्षण, वर्कशीट, परियोजनाएँ और आई. सी. टी. का उपयोग करना। इसके बाद परिचर्चा करना और फ्रीडबैक, संकेतों और संसाधनों द्वारा बच्चों की सहायता करना।
- विद्यार्थियों को अपने अधिगम को नियंत्रित करने या उसका उत्तरदायित्व स्वयं लेने के लिए शुरुआती कक्षाओं से, स्व-चिंतन, स्व-आकलन, साथी द्वारा आकलन के अवसर देना।
- कार्य करने के दौरान अवलोकनों के माध्यम से एकत्रित साक्ष्यों को रोजनामचा (लॉगबुक) और शिक्षक डायरी, वर्कशीट, दत्तकार्य, परियोजना रिपोर्ट में दर्ज करना।

सीखने के लक्षित प्रतिफल

- आसपास के पौधों, जंतुओं, वस्तुओं और स्थानों के साधारण लक्षणों की पहचान करती (ता) है।
 - विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करते हुए समानताओं या असमानताओं के आधार पर पक्षियों, जंतुओं और उनके लक्षणों, गतिविधियों के समूह बनाती/ता है।
 - वस्तुओं, गतिविधियों, भ्रमण किए गए स्थानों के बारे में अवलोकनों, अनुभवों, सूचनाओं को रिकॉर्ड करती (ता) है और पैटर्न का पूर्वानुमान लगाती (ता) है।
 - चित्रों, डिज़ाइनों, सज्जाकारी, मॉडलों, नारों, कविताओं आदि की रचना करती/ता है।
 - दिन-प्रतिदिन के जीवन में पेड़-पौधों, जंतुओं, बड़ों के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करती/ता है।
- बच्चों द्वारा अपनी नोटबुक, वर्कशीट, परियोजना रिपोर्ट, दत्तकार्यों में किए गए कार्यों को उनके पोर्टफोलियो में सम्मिलित किया जा सकता है। सीखने के प्रतिफलों पर लक्षित उनकी उपलब्धियों का आकलन करने हेतु इस कार्य का विश्लेषण किया जा सकता है। तीन माह में आयोजित विभिन्न गतिविधियों में बच्चों के सीखने और भागीदारी को शिक्षक द्वारा उनकी डायरी और लॉगबुक में रिकॉर्ड किया जा सकता है। इस रिकॉर्डिंग के उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

1. शिक्षक की डायरी

अनौपचारिक परिचर्चाएँ बताती हैं कि अधिकांश बच्चे पत्तियों की बनावट में भेद नहीं कर पाते हैं। उनमें से बहुत-से बच्चे चिकने को नरम और खुरदरे को कठोर मानते हैं। कुछ बच्चे उनकी आकृतियों में भेद करने में भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। बहुत-से बच्चे भूनने/तलने और उबालने/भाप लगवाने में भेद नहीं कर पाते। समूह में अन्य साथियों से सीखने को प्रोत्साहन देने के लिए समूह में और अधिक अवलोकन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

2. लॉगबुक

मानवी परिस्थितियों में जंतुओं के लक्षणों को पहचान सकती है। वह पक्षियों और जंतुओं में भेद करती है और पाठ्यपुस्तक के बाहर के उदाहरण भी देती है। जब उसे एक पौधे का अवलोकन करने के लिए कहा गया तो उसने घास को चुना और बताया कि इसकी पत्तियाँ हरी हैं, इसमें कोई तना नहीं है और यह सूखी हुई है। उसने आस-पास चींटियाँ, तितलियाँ और पड़ी हुई प्लास्टिक की खाली बोतलें देखीं। उसे समूह में सीखने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, क्योंकि अकसर वह अपने काम से मतलब रखती है और सहयोग करने के स्थान पर उसमें प्रतिस्पर्धा की भावना की झलक दिखाई देती है। परंतु जानवरों के प्रति उसकी संवेदनशीलता दिखाई देती है, जब उसने बताया कि वह कैसे पक्षियों और गली के कुत्तों को खाना खिलाती है। उसने एक सब्जी का पौधा लगाया। मैं अकसर उसे उस पौधे को सींचते हुए देखती हूँ। हाथ से कुछ करने और कुछ बनाने वाली गतिविधियों में उसकी कोई रुचि नहीं है।

नीचे एक शिक्षक द्वारा एक बच्चे के पोर्टफोलियो और नोटबुक में शामिल उसके काम के विश्लेषण का एक नमूना दिया गया है।

3. पोर्टफोलियो और नोटबुक

मानवी, वर्कशीट, दत्तकार्यो और परियोजनाओं में अपने प्रेक्षणों/जानकारी को बहुत व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करती है। वह विभिन्न पौधों और जंतुओं से प्राप्त होने वाले भोज्य पदार्थों, कच्चे, पकाए हुए या दोनों प्रकार से खाए जाने वाले भोज्य पदार्थों, बच्चों के लिए और बड़ों के लिए भोजन, पुराने समय के और आज के बर्तनों तथा भोजन पकाने की विधियों को पहचानती है और उनके समूह बना सकती है। परंतु उसे जंतुओं को उनके साइज के अनुसार व्यवस्थित करने और आवागमन के पैटर्न बताने में कठिनाई आती है। उसके कला और शिल्प कार्य को मौलिकता तथा सौंदर्यबोध की दृष्टि से परिष्कृत करने की आवश्यकता है।

टिप्पणी—शिक्षक डायरी में नोट की गई इस जानकारी को शिक्षक ने अपनी शिक्षण-अधिगम कार्यनीतियों की समीक्षा और सुधार हेतु काम में लिया, जबकि लॉगबुक की प्रविष्टियाँ और पोर्टफोलियो तथा नोटबुक में बच्चे के कार्य का आकलन बच्चे के सीखने की प्रगति रिपोर्ट बनाने में मदद करते हैं।

परिशिष्ट 2

बच्चे की प्रगति को रिपोर्ट करने के लिए प्रस्तावित प्रारूप

नाम—मानवी कक्षा—III			
सामान्य प्रोफ़ाइल—विभिन्न गतिविधियों में बच्चे के व्यक्तित्व, रुचियों, भागीदारी इत्यादि पर विचार करना			
शारीरिक स्वास्थ्य	तिमाही I		तिमाही III
ऊँचाई – सें.मी. भार – कि.ग्रा. अन्य (जैसे आँख और दाँत का स्वास्थ्य)			
दिन	तिमाही I	तिमाही II	तिमाही III
कार्य दिवस			
उपस्थिति			

विषय-वार विवरण

विषय पर्यावरण अध्ययन	कार्य-प्रदर्शन के स्तर*/ उपलब्धि का स्तर*								
	तिमाही I			तिमाही II			तिमाही III		
सीखने के प्रतिफल	I	II	III	I	II	III	I	II	III
आस-पास के पौधों, जंतुओं, वस्तुओं और स्थानों की सामान्य विशेषताओं को पहचानती (ता) है			P						
विभिन्न ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करते हुए, भिन्नताओं या समानताओं के अनुसार वस्तुओं, पक्षियों, जंतुओं और उनकी विशेषताओं, गतिविधियों को समूहों में बाँटती (ता) है।			P						
वस्तुओं, गतिविधियों, भ्रमण किए गए स्थानों के बारे में अवलोकनों, अनुभवों, सूचनाओं को रिकॉर्ड करती(ता) है और पैटर्न का पूर्वानुमान लगाती (ता) है।		P							
चित्रों, डिज़ाइनों, नमूने (मॉटिफ), मॉडलों, नारे, कविताओं आदि की रचना करती (ता) है।	P								

<p>खेलों और अन्य सामूहिक कार्यों में नियमों को मानती (ता) है। दैनिक जीवन में पौधों, जंतुओं, वृद्धजनों तथा दिव्यांगों के प्रति संवेदनशीलता दर्शाती (ता) है।</p>	<p>समूहों में, मानवी अधिकतर अपने काम पर ध्यान देती है और दूसरों की मदद करने का प्रयास नहीं करती। उसने अपने जन्मदिन पर सहजन का पौधा लगाया था और सावधानीपूर्वक उसका ध्यान रख रही है। वृद्धजनों और जंतुओं के प्रति उसकी संवेदनशीलता की झलक कक्षा में उसकी चित्रकारी और मौखिक अभिव्यक्तियों से मिलती है।</p>		
प्रोफ़ाइल			
<p>तिमाही I</p>	<p>मानवी एक उत्साही प्रेक्षक है, क्योंकि वह वस्तुओं को उनकी विशेषताओं के आधार पर पहचानती है और अलग-अलग समूहों में रखती है। उसके पृथक करने के कौशल अद्भुत हैं, छोटा विवरण भी उसकी आँखों से नहीं बचता। वह रिकॉर्ड करने में बहुत व्यवस्थित है परंतु अपने प्रेक्षणों का विश्लेषण करने और उनमें पैटर्न देखने के लिए उसे सहायता की आवश्यकता होती है। वह अधिगम को पाठ्यपुस्तक और विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ने में सक्षम है, जो उसके द्वारा कक्षा में दिए गए उदाहरणों और अनुभवों से सिद्ध होता है। परंतु समूह में काम करते समय उसे थोड़ा धैर्य रखने की ज़रूरत है और आवश्यकता पड़ने पर उसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए।</p>		
<p>तिमाही II</p>			
<p>तिमाही III</p>			

* कार्य-प्रदर्शन (performance) के स्तर

स्तर I अपेक्षित स्तर तक पहुँचने के लिए बहुत अधिक मदद की आवश्यकता है।

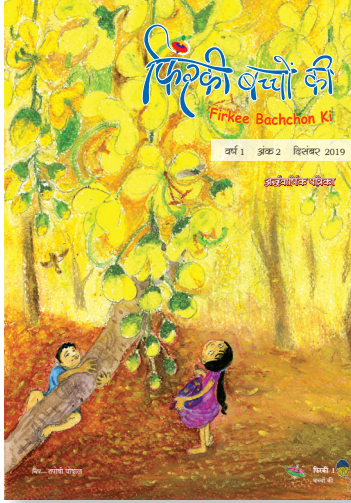
स्तर II उपयुक्त मदद और फीडबैक के साथ बेहतर करता है/करती है।

स्तर III कार्य प्रदर्शन स्तर एवं आयु उपयुक्त

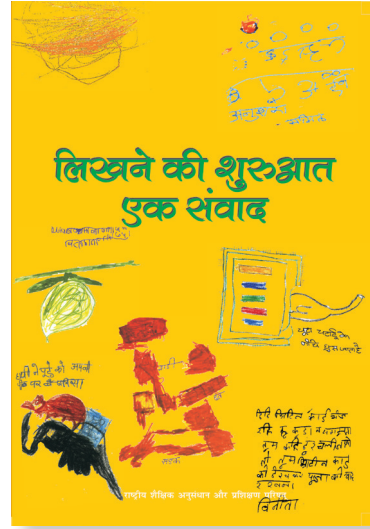
टिप्पणी—प्राथमिक और उच्च-प्राथमिक स्तरों की भी अलग-अलग स्तरानुसार प्रगति-रिपोर्ट पुस्तिकाएँ (Progress Report Booklets) बनाई जा सकती हैं।

टिप्पणी

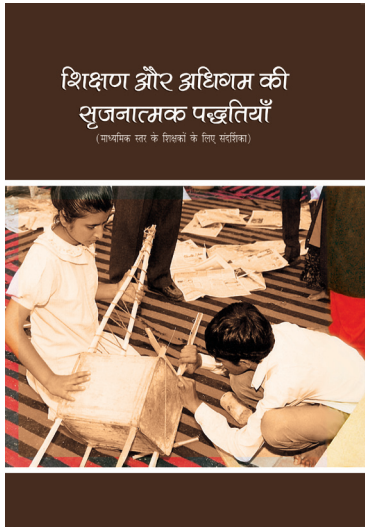
टिप्पणी



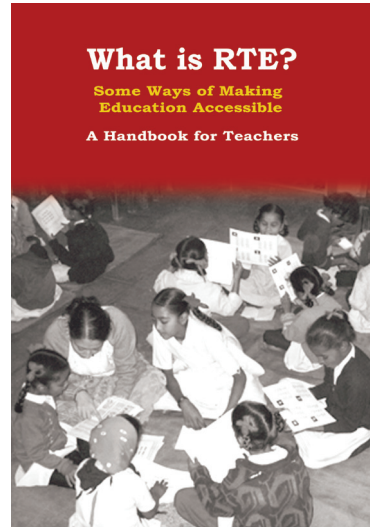
फिरकी बच्चों की
 ₹ 35.00 / पृष्ठ 24
 Reg. DELBIL2019.77753



लिखने की शुरुआत एक संवाद
 ₹ 165.00 / पृष्ठ 132
 कोड — 32107
 ISBN — 978-93-5007-268-4



शिक्षण और अधिगम की
सृजनात्मक पद्धतियाँ
 ₹ 75.00 / पृष्ठ 130
 कोड — 13107
 ISBN — 978-93-5007-280-6



What is RTE?
Some Ways of Making
Education Accessible
 ₹ 90.00 / pp.148
 Code — 13105
 ISBN — 978-93-5007-276-9

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पत्तों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन दिशानिर्देश



UN93

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-220-8